अक्तूबर (द्वितीय) 2021 कीमत : 12.00 रु.

सरस सलिल

मनभावन अंदाज खरी आवाज

R

लखीमपुर खीरी कांड : कड़वाहट से भर गया 'चीनी का कटोरा'

- 6 कहानियां
- कांग्रेस में आए कन्हैया
- ऐसे जीजा से बचे साली
- पढ़ाई से मुंह मोड़ते नौजवान
- बॉलीवुड और ड्रग्स

VISIT…

LANZAROTE
Caliente.COM

Piramal
TETMOSOL®
खुजली
लाल दाने
फोड़े
पपड़ी
से राहत दे
नया
डस्टिंग पाउडर भी उपलब्ध
Monosulfiram Medicated Soap
TETMOSOL®
contains Monosulfiram 5% w/w
Prescribed by Doctors
TETMOSOL®
DUSTING POWDER
Skin Infection Expert
ANTI-FUNGAL
TRIPLE SKIN BENEFITS
Fights Skin Infections
Controls Itching
Fights Prickly Heat
100 g
डॉक्टर का सुझाया
No.1
ब्रैंड#
नींबू जैसी ताज़ी महक

टेटमोसॉल रोज़ लगाना, मतलब त्वचा के संक्रमण^ को दूर भगाना.

नया टेटमोसोल डस्टिंग पाउडर त्वचा के इन्फेक्शन,
घमोरियां और खुजली से राहत देता है।

नज़दीकी मेडिकल स्टोर्स पर उपलब्ध।

☎ 1800 22 9898 ✉ consumercare@piramal.com

^टेटमोसॉल साबुन खुजली (स्केबीज़) के कणो के कारण होने वाले संक्रमण के लिए है। टेटमोसॉल डस्टिंग पाउडर का उपयोग फंगल इन्फेक्शन के लिए किया जाता है। स्थिति में सुधार न होने पर, डॉक्टर से सलाह लें। संक्रमण की संभावना तक रोज़ाना स्नान करें। #खाज और खुजली की दवाइयों की श्रेणी में डॉक्टरों द्वारा निर्धारित किया गया, MAT May 2020 में किये गए IMS प्रिस्क्रिप्शन ऑडिट पर आधारित। आवेदन और अन्य निर्देशों के लिए पैक देखें। रचनात्मक प्रदर्शन।

CMAC - TP:20210308-04

STOMAFIT®

लिक्विड व टैबलेट

SUNCARE
A WHO GMP COMPANY
SURE SAFE SECURE

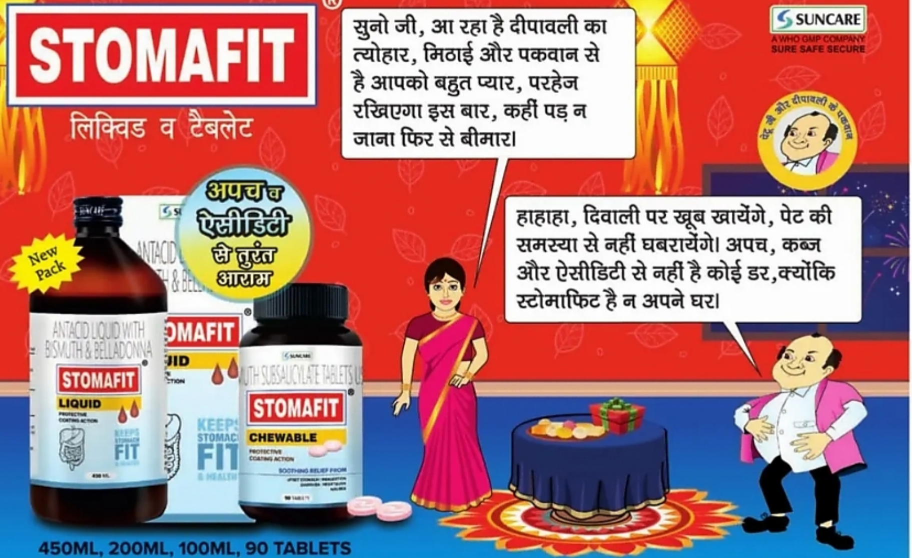
सुनो जी, आ रहा है दीपावली का त्योहार, मिठाई और पकवान से है आपको बहुत प्यार, परहेज रखिएगा इस बार, कहीं पड़ न जाना फिर से बीमार।
हाहाहा, दिवाली पर खूब खायेंगे, पेट की समस्या से नहीं घबरायेंगे। अपच, कब्ज और ऐसीडिटी से नहीं है कोई डर, क्योंकि स्टोमाफिट है न अपने घर।
अपच व ऐसीडिटी से तुरंत आराम
New Pack
ANTACID LIQUID WITH BISMUTH & BELLADONNA
STOMAFIT
LIQUID
KEEPS STOMACH FIT
STOMAFIT
CHEWABLE

450ML, 200ML, 100ML, 90 TABLETS

HAEMOCAL®

Delicious Taste

ग्लूकोज़ से भरपूर आयरन टॉनिक

भूख न लगना, साधारण कमजोरी, बवासीर से एनीमिया, बच्चों में कमजोरी व थकावट, गर्भावस्था में खून की कमी, मासिक धर्म तथा कोविड-19 से आई कमजोरी को दूर करने में सहायक

आपको और आपके परिवार को

दिपावली

की हार्दिक शुभकामनाएं

New Pack
SUNCARE
HAEMOCAL
Iron Tonic with Folic Acid
HAEMOCAL
Iron Tonic
Folic Acid

शहद सा गाढ़ा
संतरे सा स्वाष्टि

300ML, 450ML

HAEMOCAL-Z जिंक के साथ उपलब्ध(450ml)

हेमोकॉल खरीदने के लिए स्केन करें

अधिक जानकारी के लिए सम्पर्क करें:

सनकेयर फार्मूलेशन्स प्रा. लि.

फोन:8447977889/999, 011-46108735, मेल:info@stomafit.com

सभी प्रमुख ऑनलाईन फार्मेसीयों पर उपलब्ध

स्टोमाफिट खरीदने के लिए स्केन करें

सरस सलिल
मनभावन अंदाज खरी आवाज

संस्थापक : विश्वनाथ (1917-2002)

अक्तूबर (द्वितीय) 2021

अंक: 690

संपादक व प्रकाशक : परेश नाथ

मुख्य संपादकीय व विज्ञापन कार्यालय: **दिल्ली प्रेस भवन, ई-8, झंडेवाला एस्टेट, रानी झांसी मार्ग, नई दिल्ली-110055. अन्य कार्यालय:** 503, नारायण चैंबर्स, आश्रम रोड, **अहमदाबाद-380009.** जी-3, एचवीएस कोर्ट, 21, कनिंघम रोड, **बेंगलुरु-560052.** ए-4, श्रीराम इंडस्ट्रियल एस्टेट, वडाला, **मुंबई-400031 (संपादकीय कार्यालय).** बी-3, वडाला उद्योग भवन, 8, नयगांव क्रास रोड, वडाला, **मुंबई-400031 (विज्ञापन कार्यालय).** 16-ए, अमृता बनर्जी रोड (फर्स्ट फ्लोर), कालीघाट, नजदीक बासुश्री सिनेमा, **कोलकाता-700026.** 14, पहली मंजिल, सीसंस कांप्लेक्स, 150/82, मोंटीअथ रोड, **चेन्नई-600008.** 122, पहली मंजिल, चिनाय ट्रेड सेंटर लेन, 116, पार्क लेन, **सिकंदराबाद-500003.** फ्लैट नं. बी-जी/3,4 सप्रूमार्ग, **लखनऊ-226001.** बी-31, वर्धमान ग्रीन पार्क कालोनी, 80 फीट रोड, अशोका गार्डन थाना के पीछे, **भोपाल-462011.** 12, ग्राउंड फ्लोर, आशियाना टावर्स, एग्जिबीशन रोड, **पटना-800001.** गीतांजली टावर, शाप नं. 114, पहली मंजिल, अजमेर रोड, **जयपुर-302006.** जी-7, पायोनियर टावर्स, 1, मेरीन ड्राइव, **कोच्चि-682031.**

दिल्ली प्रेस पत्र प्रकाशन प्राइवेट लिमिटेड की बिना आज्ञा कोई रचना किसी प्रकार उद्धृत नहीं की जानी चाहिए. सरस सलिल में प्रकाशित कथा साहित्य में नाम, स्थान, घटनाएं व संस्थाएं काल्पनिक हैं और वास्तविक व्यक्तियों, संस्थाओं से उन की किसी भी प्रकार की समानता संयोग मात्र है.

दिल्ली प्रेस पत्र प्रकाशन प्राइवेट लिमिटेड के लिए प्रकाशक एवं मुद्रक परेश नाथ द्वारा पीएस पीसी प्रेस प्राइवेट लिमिटेड, डीएलएफ-50, इंडस्ट्रियल एरिया, फरीदाबाद, हरियाणा-121003 में मुद्रित एवं ई-8, झंडेवाला एस्टेट, नई दिल्ली से प्रकाशित.

लेखकों से: छपने के लिए भेजी जाने वाली कहानी वगैरह के साथ टिकट लगा पता लिखा लिफाफा जरूर लगाएं वरना ठीक न होने पर उसे लौटाया नहीं जाएगा. जो भी लिखें कागज के एक ओर साफसाफ शब्दों में लिखें. टाइप करी कहानी ज्यादा पसंद की जाएगी. ई मेल इस प्रकार हैं—

1. रचनाओं व स्तंभों के लिए ई मेल: article.hindi@delhipress.in
2. निमंत्रणों व प्रेस सूचनाओं के लिए ई मेल: invites.pressrelease@delhipress.biz
3. संपादक को पत्रों के लिए ई मेल: editor@delhipress.biz
4. ग्राहक विभाग के लिए ई मेल: subscription@delhipress.in

COPYRIGHT NOTICE
© Delhi Press Patra Prakashan Private Limited, New Delhi-110055. India.
No article, story, photo or any other matter can be reproduced from this magazine without written permission. THIS COPY IS SOLD ON THE CONDITION THAT JURISDICTION FOR ALL DISPUTES CONCERNING SALE, SUBSCRIPTION AND PUBLISHED MATTER WILL BE IN COURTS/FORUMS/TRIBUNALS AT DELHI.

सरस सलिल पाक्षिक पत्रिका की एक प्रति की कीमत 12 रु., एक साल के लिए 564 रु., 2 साल के लिए 1128 रु. (रजिस्टर्ड डाक से)

मुख्य वितरक: दिल्ली प्रकाशन वितरण प्राइवेट लिमिटेड
ई-8, झंडेवाला एस्टेट, रानी झांसी मार्ग, नई दिल्ली-110055
मुंबई : बी-3, वडाला उद्योग भवन, नईगांव क्रास रोड, वडाला,
मुंबई-400031 फोन नं.: 91-22-24122661/43473050

सब्सक्रिप्शन और सर्कुलेशन के लिए संपर्क करें:
फोन नंबर : 91-11-41398888.
एक्सटेंशन नंबर : 119, 221, 264.
(सोमवार से शनिवार सुबह 10 बजे से शाम 6 बजे तक)
मोबाइल/एसएमएस/व्हाट्सऐप नंबर : 08588843408
Email ID : subscription@delhipress.in

गहरी पैठ

मोदी सरकार का एक छिपा काम किसी तरह देश में फिर से पूरी तरह पौराणिक ऊंचनीच वाले समाज को बनाना है जिस में पैदा होते ही तय हो जाए कि कौन क्या बनेगा. रामायण और महाभारत में 2 राजसी घरों का झगड़ा ही सब से बड़ी बात है और पैदा होने के हक को देने या न देने पर इन पूजे जाने वाले भारीभरकम किताबों से निकलने वालों को पूजा भी जाता है और उन्हीं की तर्ज पर पैदा होने को ही जिंदगी की जड़ माना जाता है.

हमारे संविधान ने चाहे सभी अमीरों और गरीबों के बच्चों को बराबर का माना हो पर असलियत यही है कि रोजाना ऊंचे घरों में पैदा हुए लोगों की ही गारंटी है. अंबेडकर और मंडल की वजह से शैड्यूल कास्टों और बैकवर्डों को जगह मिलने लगी पर यह बात समाज के कर्ताधर्ताओं को पसंद नहीं आई और उन्होंने रामायण और महाभारत के पन्नों से कुछ पात्रों को निकाल कर जनता को ऐसा बहकाया है कि आज सादे घर में पैदा हुआ सिर्फ मजदूर बन कर रह गया है. उसे ज्यादा से ज्यादा कुछ मिल सकता है तो वह ऊंचे घरों में पैदा हुए लोगों के घरों और धंधों में छोटे काम करना या उन की सुरक्षा करने का. पुलिस और सेना में खूब भरतियां हुई हैं पर अफसरी गिनेचुनों को मिली है. आम घरों के पैदा हुए तो सलूट ही मारते हैं चाहे उन्हें चुप करने के लिए अफसरी का बिल्ला लगाने को दे दिया गया हो.

देश में बढ़ती बेरोजगारी एक पूरी साजिश है. सरकारी नौकरियों में रिजर्वेशन हो गया है इसलिए सरकार ने सरकारी कारखाने धड़ाधड़ बेचने शुरू कर दिए ताकि सादे घरों में पैदा हुए लोगों को ऊंची सरकारी नौकरियां देनी ही न पड़ें. पुलिस और सेना के अलावा कहीं और थोक में भरतियां हो ही नहीं रहीं. आधुनिक टैक्नोलौजी ने निजी कंपनियों को वह रास्ता दिखा दिया जिस में सादे घरों के लोगों का काम मशीनें कर सकती हैं और उन मशीनों को ऊंचे घरों में पैदा हुए एयरकंडीशंड कमरों में बंद दफ्तरों से चला सकते हैं.

आज हालात ये हो गए हैं कि किसानों की मौतों का मुआवजा एक अदद सरकारी नौकरी रह गई है. करनाल और लखीमपुर खीरी में राकेश टिकैत जैसे जुझारू नेता ने भी एकएक सरकारी नौकरी का वादा पा कर मौतों का समझौता कर लिया. बेकारी इतनी बढ़ा दी गई है कि एक सरकारी नौकरी किसान की जान से ज्यादा कीमती हो गई है.

नौकरियों को खत्म करने में नोटबंदी, जीएसटी, कृषि कानूनों, नागरिक कानूनों को जबरन साजिश के तौर पर लाया गया है. सरकार को पहले से पता था कि इन का क्या नुकसान होगा. इन से छोटे घरों से पनपते छोटेछोटे व्यापारी मारे जाएंगे यह एहसास सरकार को था और छोटे धंधे और छोटे व्यापार जो छोटे घरों के मेहनती युवा करने लगे थे, भारीभरकम टैक्सों, नियमों, नोटों की किल्लतों, बैंक अकाउंट रखने की जरूरत जिसे खोलना आसान नहीं है, एक पूरी साजिश की तरह थोपा गया है, ताकि देश की 80 फीसदी जनता गुलाम बन कर रह जाए. उन्हें बहलाने के लिए रामायण और महाभारत, जिसे पहले टीवी पर चला कर घरघर पहुंचा दिया गया था, से लिए पात्रों को दे दिया गया कि इन्हें बचाओ चाहे खुद मर जाओ.

आज देश बुरी तरह कराह रहा है पर हर गरीब इसे अपने पिछले जन्मों का फल मानता है क्योंकि गीता में यही कृष्ण कह गए हैं. हर गरीब शंबूक, केवट या शबरी की तरह है, इस से ज्यादा नहीं. बेरोजगार हैं तो क्या हुआ, देश के धर्म का डंका तो बज रहा है न.

★★★

करनाल और लखीमपुर खीरी में जिस बेरहमी से किसानों को मारा गया है, इस देश के लिए कोई नया नहीं है. इस समय सरकार यह समझ नहीं पा रही कि जो किसान और मजदूर नोटबंदी के समय पूंछ दबाए लाइनों में घंटों खड़े रहे आखिर कैसे हाकिमों के सामने खड़े हो कर आंख से आंख मिला कर बात कर रहे हैं. सरकार को तो आदत है कि राजा का आदेश आकाशवाणी की तरह हो कि वह भगवान का कहा है और उसे मानना हरेक को होगा ही.

कांग्रेस सरकारों ने 60-70 सालों में मंडियों का जो जाल बिछाया था वह कोई किसानों के फायदे में नहीं था पर किसानों ने हार मान कर उस में जीना सीख लिया था क्योंकि मंडी का आढ़ती और लाला उन्हीं के आसपास के गांव का तो था जिस से रोज मेलमुलाकात होती थी.

अब सरकार दूर मुंबई, अहमदाबाद में बैठे सेठों को खेती की बागडोर दे रही है जैसे अंगरेजों ने ईस्ट इंडिया कंपनी को दी थी. ईस्ट इंडिया कंपनी को तो सिर्फ लगान की फिक्र थी, आज सरकार चाहती है कि किसान वह उगाए जो सेठ चाहें, उसे बेचें, जिसे सेठों की कंपनियां चाहें, उतने पैसे पा कर जयजयकार बोलें जितने मिल जाएं.

सरकार को समझ नहीं आ रहा कि ऐसा क्या हो गया कि हमेशा से अपनी जाति की वजह से डरा रहने वाला किसान आज आंखें तरेर कर पूछ रहा है कि इस फरमान की क्या जरूरत है, क्यों उस की पीठ पर सेठों की कंपनियां लादी जा रही हैं, क्यों मंडियों के बिछे जालों को तोड़ा जा रहा है. सरकार का इरादा तो नेक था. वह चाहती है कि 1947 के बाद के भूमि सुधार कानूनों के बाद जो जमीनें शूद्र कहे जाने वाले किसानों को मिल गई थीं. एक बार फिर उन जमींदारों के हाथों में पहुंच जाएं जिन के नाम कंपनियों सरीखे हैं और जहां से वे किसानों का आज और कल दोनों तय कर सकें.

इंदिरा गांधी ने जब निजी कंपनियों का सरकारीकरण करा था तो उन्होंने प्राइवेट सेठों का हक छीन कर सरकारी अफसरों को दे दिया था.एँजनता के पल्ले तो तब भी कुछ नहीं पड़ा था. मंडी कानून भी अफसरशाही को किसानों पर बैठाने के लिए थे पर कम से कम वे मंडियां अफसरों की निजी जागीरें तो नहीं बनती थीं. उन के बच्चे बैठेबिठाए तो नहीं खा सकते थे. अब सेठों के बच्चों के अकाउंट विदेशों में खुलेंगे, पैसा वहां जमा होगा जहां टैक्स नहीं देना होता, वे हर साल 6 महीने विदेशों के मजे लेंगे और मेहनती किसान बिना अपनी जमीन के रातदिन जोत में लगेगा. किसान इस की खिलाफत कर रहे हैं तो किसानों के घरों से ही अब पुलिस बलों के सिपाहियों के हाथों उन्हें पिटवाया जा रहा है. न वह खट्टर और न वह आयुष सिन्हा जो किसानों के सिर फोड़ने की वकालत करते हुए कैमरों में पकड़े गए किसानों के घर से आए हैं.

अगर देश के नेता किसान होते जैसे देवगौड़ा, लालू प्रसाद यादव, चरण सिंह, देवीलाल या मुलायम सिंह तो किसान कानून न बनते न आफत आती. कांग्रेस ने तो जातेजाते किसानों की जमीन को छीनने को रोकने का कानून बना दिया था और नई सरकार 7 सालों में चाह कर भी उसे अपने आकाओं के हिसाब से बदल नहीं सकी तो उस ने कृषि कानूनों का सहारा लिया है कि किसान इतने फटेहाल हो जाएं कि जमीन बेच कर कुएं में कूद जाएं. नहीं तो पुलिस के डंडे और गाड़ियां तो हैं न कुचलने के लिए. ●

ग्लोइंग स्किन के लिए प्राकृतिक नुस्ख़ा

आयुर्वेदिक रूप मंत्रा फेस वॉश आपकी त्वचा से अतिरिक्त तेल, बाहरी संक्रमण, दाग-धब्बे कम करने, प्रदूषण, मुंहासे साफ कर आपकी त्वचा को स्वस्थ, कोमल बनाए, निखारने में सहायक है, जिससे आपको मिले ताजगी भरा अहसास।

New

Dr. Juneja's

Roop Mantra®

Ayurvedic Cream, Capsules & Face Wash

INDIA'S MOST TRUSTED BRAND

Most Trusted Brand of Asia 2016

NO.1 BRAND INDIA 2016

WORLD'S GREATEST BRANDS 2015-16 IIJA

Roop Mantra
CUCUMBER
Ayurvedic Medicinal Facewash
Roop Mantra
ALOEVERA
Ayurvedic Medicinal Facewash
Roop Mantra
NEEM
Ayurvedic Medicinal Facewash
Roop Mantra
MIX FRUIT
Ayurvedic Medicinal Facewash

• 24x7 Helpline: 87259 66666 • www.roopmantra.com

शुद्ध आयुर्वेदिक जड़ी–बूटियों से निर्मित

लखीमपुर खीरी कांड :

कड़वाहट से भर गया 'चीनी का कटोरा'

शैलेंद्र सिंह

लखीमपुर खीरी सब से ज्यादा गन्ने की पैदावार करता है. इस वजह से ही इसे 'चीनी का कटोरा' कहा जाता है. कृषि कानूनों के खिलाफ यहां के किसानों ने जब आवाज बुलंद की, तो उन्हें 'खालिस्तानी' कहा जाने लगा.

तराई के इस इलाके ने ही भारतीय जनता पार्टी को विधानसभा चुनाव में 32 सीटें और लोकसभा चुनाव में 3 सीटें जितवाई थीं. अब भाजपा सिखों को 'खालिस्तानी' कह कर दरकिनार करने की कोशिश कर रही है.

केंद्र सरकार के 3 कृषि कानूनों के खिलाफ चल रहे किसान आंदोलन को कुचलने के लिए हर तरह के छल और बल का प्रयोग केंद्र की भाजपा सरकार और उस की 'ट्रोल आर्मी' ने किया. आंदोलन में हिंसा भड़क जाए, इस का इंतजाम भी अराजक लोगों ने किया.

26 जनवरी, 2021 को लालकिले पर इस की बानगी मिल चुकी थी. इस वजह से उत्तर प्रदेश के लखीमपुर खीरी में किसान नेता चौधरी राकेश टिकैत को दो कदम पीछे खींचने पड़े.

किसी भी आंदोलन को लंबा चलाने के लिए कई बार ऐसे फैसले लेने पड़ते हैं. आंदोलन में हिंसा का सहारा ले कर सत्ता पक्ष पूरे किसान आंदोलन को खत्म कर सकता था. ऐसे में राकेश टिकैत ने दो कदम पीछे खींच कर गेंद उत्तर प्रदेश सरकार के पाले में डाल दी है.

भारतीय किसान यूनियन (टिकैत) के लखनऊ जिला महामंत्री दिलराज सिंह कहते हैं, "उत्तर प्रदेश सरकार ने अगर सही से इंसाफ नहीं किया, तो यही मुद्दा चुनाव में उस की हार का जिम्मेदार होगा. हम ने सरकार के आश्वासन पर किसानों को इंसाफ दिलाने के लिए बात की है. हमारे लोग लगातार किसानों के संपर्क में हैं. अगर सरकार ने कोई वादाखिलाफी की और सही इंसाफ नहीं किया, तो हम चुप नहीं बैठेंगे."

बक्शी का तालाब, लखनऊ के रहने वाले सरदार गुरुमीत सिंह कहते हैं, "हम किसान जब उत्तर प्रदेश के तराई इलाके में आए थे, तब वहां जंगल था. रातदिन जंगली जानवरों का खतरा रहता था. जिन जंगलों में लोग जाने से डरते थे, हम ने वहां खेती शुरू की और अपनी मेहनत से जंगली जमीन को उपजाऊ बनाया. हमारी मेहनत ने उस जंगली जमीन को 'चीनी के कटोरे' में बदल दिया.

"हमारे लिए खेती ही सबकुछ है, इसलिए खेती को बचाने के लिए हम सालभर से सड़कों पर हैं. सरकार के हर जुल्म और इलजाम को सिरआंखों पर रखते हुए शांतिपूर्वक अपनी बात कह रहे हैं. हमें केंद्र के ये काले कानून स्वीकार नहीं हैं."

कैसे भरी कड़वाहट

उत्तर प्रदेश और उत्तराखंड की सीमा पर बसी तराई बैल्ट में पंजाब से आए किसानों ने खेती की तसवीर बदल दी. इस का असर उत्तर प्रदेश के दूसरे जिलों में भी देखा जा सकता है.

पंजाब से आए किसानों ने 'ऊसर' और 'बंजर' जमीन को खेती के लायक बना कर अपने फार्महाउस बनाए.

पंजाब से आए इन किसानों की तादाद केवल 4 फीसदी ही है. इस के बाद भी उन्होंने अपनी मेहनत से खेतीकिसानी को पूरी तरह से बदल दिया है. पूरे देश के किसान साल में धान की केवल एक फसल ही ले पाते हैं. पंजाब से आए ये किसान अपने खेतों में धान की 2 फसलें लेते हैं.

नेपाल सीमा से लगा उत्तर प्रदेश का जिला लखीमपुर खीरी 7,680 स्क्वायर किलोमीटर इलाके में फैला है. लखीमपुर और खीरी 2 नगरों पर इस का नाम रखा गया है. नेपाल सीमा के साथसाथ यह पीलीभीत, बहराइच, सीतापुर, शाहजहांपुर और हरदोई जिलों से सटा हुआ है.

लखीमपुर की खुशहाली का असर इन जिलों में भी देखा जा सकता है. यहां भी पंजाब से आए किसानों ने अपनेअपने फार्म बना कर खेती की दशा को सुधार दिया है.

खीरी 'खर' नाम के जंगली पेड़ों से घिरा था. इस वजह से ही इस इलाके का नाम खीरी पड़ा. यहां का कुछ हिस्सा दलदली जमीन वाला है. किसानों ने इस दलदली जमीन को खेती के लायक बनाया.

अनदेखी का शिकार

लखीमपुर खीरी, पीलीभीत, बहराइच, सीतापुर, शाहजहांपुर और हरदोई में किसान जागरूक हैं. इस वजह से यहां के किसान केंद्र सरकार के 3 कृषि कानूनों के खिलाफ लगातार आंदोलन कर रहे हैं.

यहां के किसानों ने पिछले चुनाव में भारतीय जनता पार्टी को सब से ज्यादा सीटों से चुनाव जितवाया था. साल 2017 के विधानसभा चुनावों में इस इलाके की 36 विधानसभा सीटों में से 32 सीटों पर भाजपा का कब्जा हुआ था. साल 2019 में 3 लोकसभा सीटें खीरी, धौरहरा और सीतापुर भाजपा के खाते में गई थीं.

यहां का 4 फीसदी सिख तबका भाजपा के पक्ष में था. वह भले ही तादाद में कम हो, पर उस का असर ज्यादा है. ऐसे में तराई के इस इलाके में सिख वोट जीत में बहुत माने रखते हैं. किसान आंदोलन में हिस्सा लेने के चलते सिख तबका भाजपा के लिए विलेन हो गया. उस पर 'खालिस्तान' समर्थक होने के आरोप लगे.

इस की सब से बड़ी वजह यह है कि यहां के लोगों की नजरों में सिखों की खुशहाली खटकती है. वे उन पर दबंगई करने के बहाने तलाश करते रहते हैं. किसान आंदोलन के दौरान यह मौका उन्हें मिल गया और वे यहां के किसानों को निशाने पर लेने लगे.

10 महीने से यहां के किसान ऐसी हालत में पिस रहे हैं. दिल्ली से खीरी तक हर घटना में सिख किसानों को बदनाम करने का काम किया गया. आखिरकार 3 अक्तूबर, 2021 की काली घटना भी घट गई, जिस में 4 किसानों की गाड़ी से कुचल कर हत्या कर दी गई.

मंत्री की धमकी से भड़की आग

लखीमपुर में हुए किसानों के हत्याकांड की बुनियाद पहले पड़ चुकी थी. 25 सितंबर, 2021 को केंद्रीय गृह राज्यमंत्री अजय मिश्रा 'टेनी' को गदनिया और महंगापुर में आंदोलन कर रहे किसानों ने काले झंडे दिखाए थे.

महंगापुर के रहने वाले किसान

अमनीत सिंह और उस के 2 साथियों के खिलाफ मुकदमा कायम करा दिया गया.

इसी मामले में दूसरा मुकदमा गदनिया में महेंद्र सिंह समेत 40-45 अज्ञात लोगों के खिलाफ कायम हुआ था.

अमनीत सिंह पर यह आरोप था कि उस ने काले झंडे दिखाने का वीडियो वायरल किया. पुलिस ने इन लोगों पर इस बात का मुकदमा भी दर्ज किया कि झंडा दिखाने वालों ने 'कोविड 19' के प्रोटोकाल को भी नहीं माना था.

अजय मिश्रा 'टेनी' के खिलाफ किसानों का गुस्सा यहीं से पनपने लगा था. वहीं पर किसानों ने यह रणनीति बनाई कि अब उत्तर प्रदेश के डिप्टी सीएम केशव प्रसाद मौर्य को भी काले झंडे दिखाए जाएंगे.

केंद्रीय गृह राज्यमंत्री अजय मिश्रा 'टेनी' दबंग सांसद माने जाते हैं. लखीमपुर के तिनकुनिया इलाके में साल 2000 में प्रभात गुप्ता की हत्या के मामले में उन का नाम सामने आया था. लखीमपुर की सत्र अदालत ने सुबूत की कमी में साल 2004 में उन्हें बरी कर दिया था. इलाहाबाद हाईकोर्ट की लखनऊ बैंच में यह मामला 17 साल से लंबित है.

अजय मिश्रा 'टेनी' को किसानों का इस तरह से झंडा दिखाना अच्छा नहीं लगा था. झंडा दिखाने के बाद जनसभा को संबोधित करते हुए उन्होंने इस घटना का जिक्र करते हुए मंच से किसानों को धमकी दी थी.

इस का वीडियो वायरल हो गया. इस में मंत्री अजय मिश्रा 'टेनी' ने कहा था, "किसानों के अगुआ यानी संयुक्त किसान मोरचा के लोग प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी का सामना नहीं कर पा रहे हैं. आंदोलन को 10 महीने हो गए हैं."

काले झंडे दिखाने वालों के लिए आगे अजय मिश्रा 'टेनी' ने कहा, "अगर हम गाड़ी से उतर जाते, तो उन्हें भागने का रास्ता नहीं मिलता. कृषि कानून को ले कर केवल 10-15 लोग शोर मचा रहे हैं. यदि कानून इतना गलत है, तो अब तक पूरे देश में आंदोलन फैल जाना चाहिए था."

अजय मिश्रा 'टेनी' ने धमकी भरे लहजे में कहा, "सुधर जाओ, नहीं तो सामना करो, वरना हम सुधार देंगे. 2 मिनट लगेंगे. विधायकसांसद बनने से पहले से लोग मेरे विषय में जानते होंगे कि मैं चुनौती से भागता नहीं हूं. मैं अपनी पर उतर आया, तो लखीमपुर ही नहीं, बल्कि पलिया तक जगह नहीं मिलेगी."

केंद्र सरकार में मंत्री बनने के बाद अजय मिश्रा 'टेनी' के बरताव में ही नहीं उन के पूरे खेमे के बरताव में बदलाव आ गया, जिस की वजह से जनप्रतिनिधि होने के बाद भी वे अपने इलाके की जनता से अच्छा बरताव नहीं कर सके.

वैसे, अजय मिश्रा 'टेनी' ऐसे आरोपों को गलत बताते हैं. वे अपने 'धमकी' वाले वीडियों को भी पुराना बताते हैं.

दिखाने थे काले झंडे

3 अक्तूबर, 2021 को उत्तर प्रदेश के उपमुख्यमंत्री केशव प्रसाद मौर्य का लखीमपुर खीरी में सरकारी कार्यक्रम था. इसी दिन केंद्रीय गृह राज्यमंत्री और खीरी के सांसद अजय मिश्रा 'टेनी' के गांव में 'दंगल' का कार्यक्रम भी था.

केशव प्रसाद मौर्य को यहां भी मुख्य अतिथि के रूप में जाना था. किसानों ने सब से पहले इंटर कालेज के मैदान पर बने हैलीपैड पर अपने ट्रैक्टर खड़े कर दिए, जिस से वहां हैलीकौप्टर न उतर सके.

इस बात की सूचना लखनऊ में केशव प्रसाद मौर्य को मिली, तो उन्होंने कार्यक्रम में फेरबदल किया और सड़क मार्ग से लखीमपुर पहुंच कर शिलान्यास व लोकार्पण कार्यक्रम में हिस्सा लिया. इस के बाद उन्हें अजय मिश्रा के गांव बनवीरपुर जाना था.

उपमुख्यमंत्री को लेने के लिए अजय मिश्रा 'टेनी' के समर्थक 4 गाड़ियों में गांव से निकले. बताया जाता है कि एक गाड़ी में मंत्री के बेटे आशीष मिश्रा 'मोनू' भी थे. किसानों का जब इस बात की खबर लगी, तो वे हजारों की संख्या में निघासन तहसील के तिकुनिया कसबे में जमा हो गए.

मंत्री समर्थकों का काफिला 3 अक्तूबर, 2021 की दोपहर को तकरीबन साढ़े 3 बजे जब गुरुनानक तिराहे पर पहुंचा, तो वहां भीड़ ने उसे रोक लिया. पुलिस के कुछ सिपाही काफिला निकालने की कोशिश कर रहे थे. किसान लाठीडंडों से गाड़ियों को रोक रहे थे. जब गाड़ियां नहीं रुकीं तो पथराव कर दिया. इस के बाद जाम खुल गया और किसान आगे बढ़ने लगे.

रौंदे गए किसान

इस बात की जानकारी जब मंत्री खेमे के लोगों को लगी, तो उन के अंदर भी गुस्सा भर गया. किसानों की भीड़ सड़क पर चल रही थी. इतने में सड़क पर तेजी से 3-4 गाड़ियां निकलीं. इन में सब से आगे काले रंग की 'थार' तेज रफ्तार से किसानों को रौंदती हुई आगे निकल गई.

इस घटना का पूरा वीडियो है, जिस में यह साफतौर पर दिख रहा है कि जानबूझ कर किसानों पर गाड़ी चढ़ाई गई है. इस में 4 किसानों की मौत हो गई.

इन किसानों में चौखड़ा फार्म मझगई

Dhanwantri Divine-9

क्या आपके साथ ऐसा तो नही ?

★ जल्दी-जल्दी जुकाम या गला खराब होता है ★ शरीर में कमजोरी बनी रहती है या वजन घट रहा हो
★ एलर्जी, बुखार और इन्फैक्शन शीघ्र होता हो ★ जल्दी-जल्दी पेट खराब होता हो।

ये सभी रोग प्रतिरोधक क्षमता की कमी के कारण हो सकते हैं।

Divine-9™
ADAPTOGEN IMMUNOPOTENTIATOR

एक आयुर्वेदिक औषधि है और रोगों से लड़ने की क्षमता बढ़ाने में सहायक है, सोचना आपको है कि रोगों से लड़ना है या रोगों से घिरे रहना है।

मिलिए मेरी नई फैमिली से
जो रहे फिट हमेशा

2007 से ही अश्वगंधा, गिलोय व तुलसी औषधि Divine-9 में पहले से ही मौजूद है।

सन् 1921 से हमारे प्रसिद्ध अन्य उत्पाद सुन्दरी सुधा, स्वर्ण मधु, पाचन अमृत सुधा।

वितरक रहित क्षेत्रों में वितरक बनने हेतु सम्पर्क करें - 09258040152, 05921250052

निर्माताः धन्वंतरि फार्मास्युटिकल, काशीपुर (उत्तराखण्ड) मो0 : 07618570252, 09412245652

बिहार-0612-2673987, झारखण्ड-9771390698, उ.प्र.-लखनऊ-9415768958, इलाहाबाद-9236011955, कानपुर-9839940626, आगरा-9412166680, अलीगढ-9837843430, गोरखपुर-9336400742, बरेली-इमदाद हुसैन-9411070751, शाहजहांपुर-9450442978, मेरठ-9837270117, 0124135025, 9212771106, कोलकाता-09432485534, 07278040890, दिल्ली-9810386276, 9899161855, राजस्थान-9413381007, 9413381008, छत्तीसगढ-9301315674, मध्य प्रदेश-उज्जैन-09826284858, इन्दौर-0731-2463274, 9098144825, भोपाल-09893257976, जबलपुर-09424686874, पंजाब-जालंधर-01679-231670, 501670, 9417331070, हरियाणा-फतेहाबाद-09812446363, रोहतक-09812341685, 09466278067, 08901387927, फरीदाबाद-01292417565

हेल्पलाइन नं. 9358256552

पलियाकलां के 18 साल के लवप्रीत सिंह, धौरहरा के रहने वाले 55 साल के नक्षत्र सिंह, नानपारा बहराइच के 40 साल के गुरुविंदर सिंह और बंजारन टांडा नानपारा बहराइच के 36 साल के दलजीत सिंह शामिल थे. तमाम दूसरे किसान भी गंभीर रूप से घायल हो गए.

इस बात की सूचना मिलते ही वहां पर तोड़फोड़ और मारपीट शुरू हो गई. इस के बाद भीड़ ने निघासन के रहने वाले 30 साल के पत्रकार रमन कश्यप, लखीमपुर के रहने वाले 27 साल के शुभम मिश्रा, फरधान के रहने वाले 26 साल के हरिओम मिश्रा और सिंगाही कला के रहने वाले 30 साल के श्याम सुंदर निषाद की हत्या कर दी. ये मारे गए लोग अजय मिश्रा के ड्राइवर और समर्थक थे.

इस घटना के बाद पूरे देश में इस का विरोध शुरू हो गया. विपक्षी नेताओं ने लखीमपुर पहुंच कर किसानों की लड़ाई लड़ने का ऐलान कर दिया.

उत्तर प्रदेश सरकार पूरे मामले को कंट्रोल करने में लग गई. लखीमपुर में इंटरनैट की सेवाएं बंद कर दी गईं. केंद्र और प्रदेश की पुलिस यहां लग गईं. लखीमपुर से लगी हर जिले की सीमाएं सील कर दी गईं. नेताओं को लखीमपुर जाने से रोक दिया गया.

भारतीय किसान यूनियन के नेता और किसान आंदोलन के अगुआ राकेश टिकैत को यह लगा कि उत्तर प्रदेश सरकार आंदोलन में हिंसा का बहाना बना कर आंदोलन को कुचल सकती है. ऐसे में उन्होंने किसानों के लिए इंसाफ की मांग करते हुए पूरे मामले की जांच और किसानों की मदद की मांग की.

उत्तर प्रदेश सरकार ने मरने वालों के परिवार को 45 लाख रुपए नकद और एक सदस्य को सरकारी नौकरी देने का वादा किया. पूरा मामला अब जांच एजेंसियों, पुलिस और सुप्रीम कोर्ट के संज्ञान में है.

अजय मिश्रा 'टेनी' के बेटे आशीष मिश्रा 'मोनू' सहित अज्ञात लोगों के खिलाफ मुकदमा अपराध संख्या 219/2021 धारा 147, 148, 149, 279, 338, 304 ए, 302, 120 बी आईपीसी के तहत थाना तिकुनिया, जिला खीरी में दर्ज कर लिया.

विपक्षी नेताओं का दबाव

भाजपा और उस के पक्ष में काम करने वाली 'ट्रोल आर्मी' ने लखीमपुर हादसे के पीछे सब से पहले 'खालिस्तान' का नाम लिया, पर बात नहीं बनी. भाजपा को यह पता था कि किसानों को कार के नीचे रौंदने की घटना का चुनावी नुकसान केवल उत्तर प्रदेश के विधानसभा चुनाव में ही नहीं होगा, बल्कि पंजाब विधानसभा चुनाव में भी इस का नतीजा भुगतना पड़ेगा.

यहां भाजपा की केंद्र और प्रदेश सरकार अलगअलग तरह से काम कर रही थी. प्रदेश सरकार ने मंत्री अजय मिश्रा 'टेनी' के खिलाफ काम करना शुरू कर दिया था, जिस से किसानों के गुस्से को शांत किया जा सके.

अजय मिश्रा और केंद्रीय गृह मंत्री अमित शाह की मुलाकात के बाद अजय मिश्रा 'टेनी' पर कार्यवाही करने को दरकिनार किया गया. सूत्र बताते हैं कि केंद्रीय हाईकमान ने अजय मिश्रा को ले कर उत्तर प्रदेश सरकार से नरमी बरतने को कहा. इस के बाद अजय मिश्रा उत्तर प्रदेश सरकार की बैठक में शामिल हुए.

विपक्षी नेता प्रियंका गांधी को 57 घंटे उत्तर प्रदेश सरकार ने सीतापुर में पीएसी के गैस्ट हाउस को अस्थायी जेल बना कर बंद कर रखा था. राहुल गांधी के आने के बाद उन्हें छोड़ा गया. इस के बाद वे दोनों मरने वाले किसानों के परिवारों से मिले और उन्हें मदद का भरोसा दिलाया.

कांग्रेस के पंजाब से मुख्यमंत्री चरनजीत सिंह 'चन्नी' और छत्तीसगढ़ के मुख्यमंत्री भूपेश बघेल भी लखीमपुर गए और मरने वालों को 50-50 लाख रुपए नकद का मुआवजा देने की घोषणा की.

कांग्रेस नेता नवजोत सिंह सिद्धू, समाजवादी पार्टी के नेता अखिलेश यादव, बसपा नेता सतीश मिश्रा और आम आदमी पार्टी के संजय सिंह सहित बहुत सारे नेताओं ने लखीमपुर का दौरा किया.

लखीमपुर में किसानों के साथ जो हादसा हुआ है, वह भले ही ऊपर से शांत दिख रहा हो, पर अंदर ही अंदर गुस्से और विरोध की आग धधक रही है. उत्तर प्रदेश के साथसाथ पंजाब विधानसभा चुनाव में इस का असर देखने को मिलेगा. ●

राजनीति

कन्हैया और राहुल की जुगलबंदी

जैसा कि लंबे समय से इंतजार था, कन्हैया कुमार जैसा कोई ऊर्जावान नेता आ कर कांग्रेस को जोश से भर दे, आखिरकार यह हो ही गया.

कन्हैया कुमार का कांग्रेस में आना जहां पार्टी के लिए अच्छा है, वहीं देश के लिए भी शानदार कहा जा रहा है, क्योंकि बहुत ही कम समय में कन्हैया कुमार ने अपनी राजनीतिक सोच और विचारों से देशभर में बहुत लोगों को अपना मुरीद बना लिया है.

ऐसे में यह कहा जा सकता है कि राहुल गांधी ने उन्हें अपने साथ ला कर एक अहम कदम उठाया है. कन्हैया कुमार को कांग्रेस में खास जिम्मेदारी दे कर पार्टी में एक नई ऊर्जा का संचार किया जा सकता है.

कांग्रेस का यह मास्टर स्ट्रोक इसलिए आज चर्चा का विषय बन गया है, क्योंकि भारतीय जनता पार्टी के सामने कांग्रेस लगातार कमजोर होती जा रही है. इस की एक ही वजह है कि कांग्रेस में दबदबे वाले और लोकप्रिय नेताओं की कमी हो गई है.

भारतीय जनता पार्टी लगातार कांग्रेस को कमजोर करने में लगी है और उस के नेताओं को अपनी पार्टी में जोड़ती चली जा रही है, उस से कांग्रेस की हालत ज्यादा अच्छी नहीं रह गई है.

कन्हैया कुमार साल 2015 में जवाहरलाल नेहरू यूनिवर्सिटी के अध्यक्ष बने थे और उस के बाद धीरेधीरे उन की शख्सीयत निखर कर सामने आई.

आज कन्हैया कुमार की उम्र महज 37 साल है और इतनी कम उम्र में इतनी ज्यादा राजनीतिक ऊंचाई नाप लेना अपनेआप में खास है.

जहां एक तरफ वे देशव्यापी नेता के रूप में अपनी पहचान बना चुके हैं, वहीं दूसरी तरफ उन पर कथित रूप से देश के खिलाफ नारे लगाने का भी आरोप लगा है और वे जेल यात्रा कर के आ गए हैं. अब तो उन्हें चुनाव लड़ने का भी अनुभव हो चुका है.

भारतीय कम्यूनिस्ट पार्टी में रह कर कन्हैया कुमार ने एक तरह से अपनेआप को तोल लिया है कि आखिर उन की उड़ान कितनी हो सकती है.

दरअसल, भारतीय कम्यूनिस्ट पार्टी के अपने नियमकायदे होते हैं और वहां व्यक्ति विशेष की नहीं, बल्कि विचारधारा की चलती है. ऐसे में कन्हैया कुमार के पास एक ही रास्ता था कि वे कम्यूनिस्ट दायरे से बाहर आ कर किसी राष्ट्रीय पार्टी का दामन थाम लें.

कांग्रेस और राहुल गांधी का आगे आ कर कन्हैया कुमार को हाथोंहाथ लेना जहां एक तरफ उन्हें एक नई धार दे गया है वहीं दूसरी तरफ देश में काम करने का उन्हें मौका भी मिलेगा. अब सिर्फ एक ही सवाल है कि कांग्रेस अपनी संकीर्ण सोच से बाहर निकल कर कन्हैया कुमार को कुछ ऐसी जिम्मेदारी दे, जिस से पार्टी को भी फायदा हो और देश को भी.

आने वाले समय में बिहार में भी कन्हैया कुमार की उपस्थिति का फायदा कांग्रेस को मिलने की संभावना है. यही वजह है कि पटना में कांग्रेस मुख्यालय में कन्हैया कुमार और राहुल गांधी के बड़ेबड़े पोस्टर दिखाई देने लगे हैं.

लंबे समय से यह कयास लगाया जा रहा था कि कांग्रेस में कन्हैया कुमार और जिग्नेश पटेल आ रहे हैं. इस खबर से जहां कांग्रेस में एक नई ऊर्जा का संचार दिखाई दे रहा था, वहीं भारतीय जनता पार्टी में भी इस को ले कर चिंता की लकीरें साफ दिखाई दे रही थीं. क्योंकि कन्हैया कुमार और जिग्नेश पटेल जैसे युवा नेता किसी भी पार्टी को एक नई दिशा देने में सक्षम हैं.

यह माना जा रहा है कि अगर राहुल गांधी और प्रियंका गांधी कन्हैया कुमार जैसे नेताओं को आगे कर के देशभर में आम जनमानस से मिलने निकल पड़ें और छोटीछोटी सभाएं कर के लोगों से सीधा संवाद करें और भाजपा और नरेंद्र मोदी की गलतियों पर चर्चा करें, तो देखतेदेखते माहौल बदल सकता है. **– सुरेश चंद्र रोहरा** ●

Mr. Cook®
Pressure Cookers
देश के कुकर में ही आता है देश के खाने का स्वाद...
WARRANTY 60 MONTHS
Mr. Cook
PRESSURE COOKER
मिस्टर कुक
SUPERIOR QUALITY
5 LITRE
METALIK
Mr. Cook
IS : 2347
CM/L-3294967
United Metalik Private Limited
Visit Our Website: www.unitedgrouponline.com

पोंगापंथ

शिल्पा और राज कुंद्रा : अपराध और भगवान

फिल्म हीरोइन शिल्पा शेट्टी का वैष्णो देवी जाना एकसाथ कई सवाल खड़े कर देता है. हाल ही में उन के पति राज कुंद्रा पर पोर्नोग्राफी के गंभीर आरोप लगे, वे जेल में रहे और उस के बाद जमानत पर छूटे.

पति पर आई इस मुसीबत के चलते शिल्पा शेट्टी भक्ति में लीन हो गईं. सवाल उठता है कि ऐसा क्यों होता है कि जब भी कोई शख्स अपराध के आरोपों से घिर जाता है, पुलिस और कानून के शिकंजे में फंस जाता है, तो उसे और परिवार वालों को भगवान याद आता है?

इस के बाद गलत तरीके से कमाए गए पैसों से किसी धार्मिक स्थल पर चढ़ावा चढ़ा दिया जाता है, कहीं कोई मंदिर बनवा दिया जाता है और यह समझ लिया जाता है कि प्रायश्चित हो गया और मुक्ति मिल गई.

समाज में यह सोच बेहद घातक है और एक तरह से अपराध करने की अप्रत्यक्ष रूप से छूट देती है यानी पहले तो आप खूब अपराध कीजिए, जितना हो सके दोनों हाथों से लूटिए और जब पुलिस पकड़ ले तो भगवान की शरण में चले जाओ.

यह सोच न जाने कब से चली आ रही है और न जाने कब खत्म होगी. यह एक ऐसा घातक मनोविकार है, जिस का कोई ओरछोर भी नहीं है. मगर हम यह कह सकते हैं कि इस सोच को न जाने कब से समाज और परिवार का एक तरह से समर्थन मिला हुआ है, जिस के चलते यह बढ़ती चली जा रही है और एक नासूर बन चुकी है, जिस का खत्म होना बहुत जरूरी है.

शिल्पा शेट्टी का बरताव

पुलिस ने शिल्पा शेट्टी के पति राज कुंद्रा पर पोर्नोग्राफी का आरोप लगाया और गिरफ्तार किया तो शिल्पा शेट्टी का बरताव देखने लायक था. वे एक पत्नी होने के नाते यकीनन सबकुछ जानती होंगी कि सच क्या है और झूठ क्या है, मगर उन्होंने सार्वजनिक रूप से यही कहा कि उन के पति राज कुंद्रा ऐसा कभी नहीं कर सकते, उन्हें फंसाया गया है.

लाख टके का सवाल यह है कि राज कुंद्रा जैसे एक शख्स को, जो एक सैलिब्रिटी का पति है और जिस की अपनी एक अहमियत और हैसियत है, वजूद है, उसे भला कोई कैसे और क्यों फंसा सकता है?

इस मामले में जिस तरीके से बयान आए और कई लड़कियों ने खुल कर राज कुंद्रा की असलियत को बताना शुरू किया, तो फिर बाकी बचा क्या रह गया. और जैसा कि हमेशा होता रहा है कि अगर कोई हमारा परिजन आपराधिक कांड में शामिल पाया जाता है, तो हम आमतौर पर उस के पक्ष में खड़े रहते हैं और यही काम शिल्पा शेट्टी ने भी किया. मगर इस से समाज में जिस तरह की गलत सोच को बढ़ावा मिल रहा है, वह कैसे खत्म होगी?

धनदौलत के लालच में लोग कानून को अपने हाथ में ले कर किस तरह से फिल्मी दुनिया की आड़ में रुपए बनाने का खेल करते हैं, यह कुछकुछ राज कुंद्रा मामले में देश देख रहा है.

शिल्पा शेट्टी ने अपना तथाकथित धर्म निभाया है, यह कहा जा सकता है, लेकिन समाज और देश का धर्म क्या है? क्या कोई परिजन अपराध करने लगे तो उस का बचाव करना और उसे कानून से बचा कर ले आना ही इनसानी धर्म है?

यकीनन, यह गलत होगा और गलत है, मगर समाज में जब हमारे आसपास यही हो रहा है, जब देशदुनिया के बड़े लोग यही कर रहे हैं, तो फिर कानून का राज कहां है? क्या इस तरीके से कानून को धता नहीं बताया जा रहा है?

कोई सांई बाबा कोई वैष्णो देवी

राज कुंद्रा के खिलाफ मुंबई क्राइम ब्रांच ने 1,500 पन्नों की चार्जशीट दायर कर दी है. आरोपपत्र में शिल्पा शेट्टी के बयान को भी दर्ज किया गया है. ऐसा लग रहा है, जब राज कुंद्रा बुरी तरह फंस गए हैं तो मुश्किल हालात में शिल्पा शेट्टी वैष्णो देवी के दर्शन के लिए पहुंच गईं.

अकसर देखा गया है कि जब कोई कानून के फंदे में फंसता है, तो बचने के लिए किसी न किसी देवीदेवता की शरण में पहुंच जाता है.

आमतौर पर हम देखते हैं कि यही वजह होती है कि देश के बहुचर्चित मंदिरों में करोड़ों रुपए का चढ़ावा पहुंचता है और करोड़ों रुपए के ट्रस्ट बनते जा रहे हैं. पर आम गरीब आदमी को दो वक्त का भोजन भी नहीं मिलता. यह एक बहुत बड़ा सच है. यह सोच देश और इनसानियत के लिए अपराध है और घातक भी. ●

सुरेश चंद्र रोहरा

प्यार बढ़ेगा, दूध बहेगा!
कपिला पशु आहार एवं कश्यप
25 वर्षों से विश्वसनीय
सुप्रीम पैलेट SUPREME PELLET
सबसे ज्यादा 75% पोषण
अच्छा स्वास्थ्य | लंबी आयु | ज़्यादा दूध
एक मात्र निर्माता : कामधेनु कैटिल फीड्स प्रा० लि० 84/54, जरीब चौकी, जी.टी. रोड, कानपुर • Ph.: 0512-2520177, 2520178, 9235425981, E-mail :info@kapilacattlefeed.com

सच्ची सहेली®

आयुर्वेदिक औषधीय टॉनिक

Divisa

- कठिन दर्द
- चिड़चिड़ापन
- थकान
- कमजोरी
- कमर कटना
- इम्यूनिटी

आदि में सहायक

सच्ची सहेली
आयुर्वेदिक औषधीय टॉनिक
67 जड़ी-बूटियों से बना, महिलाओं के लिए गुणकारी आयुर्वेदिक टॉनिक

INDIA'S MOST TRUSTED BRAND

WORLD'S GREATEST BRANDS 2015-16 IUA

अब पहले से ज्यादा फायदा

67 दुर्लभ प्राकृतिक जड़ी बूटियों से बना 'सच्ची सहेली' आयुर्वेदिक टॉनिक विशेष लाभकारी है।

24x7 Helpline: 77106 44444 | www.facebook.com/sachisaheli

Available at all medical & general stores

ऐसे जीजा से बचियो

भारत भूषण श्रीवास्तव

दिल को दहला देने वाली यह वारदात राजस्थान के बाड़मेर जिले के गांव पोशाल नवपुरा की है. अधेड़ हो चले यहां के एक बाशिंदे पुरखाराम की बीवी, जिस का नाम पप्पू था, की मौत कोरोना से जून महीने में हो गई थी. तब से वह परेशान और चिंतित रहता था कि अब 4-4 बेटियों की परवरिश अकेले वह कैसे करेगा? उस की सब से बड़ी बेटी की उम्र 7 साल और सब से छोटी बेटी की उम्र महज डेढ़ साल है.

बिलाशक कोरोना के कहर ने दूसरे कई लोगों की तरह पुरखाराम की जिंदगी में भी तूफान मचा दिया था, लेकिन एक मिसाल इस गांव के लोगों ने कायम की थी, जिस का जिक्र कहीं नहीं हुआ था कि उन्होंने 2 लाख रुपए का चंदा कर के उसे दिए थे, जिस से वह अपनी बेटियों की परवरिश करते हुए उन्हें पढ़ा सके और इस सदमे से उबरते ही दोबारा काम पर जा सके.

बीवी की मौत के बाद बेटियों को ननिहाल जाना पड़ गया था और तब से वे वहीं रह रही थीं. वहां मौसी नेहा (बदला हुआ नाम) के साथ रहते हुए वे अपनी मां की मौत का दुख भूलने लगी थीं, जिन्हें लोगों ने इतना बताया था कि तुम्हारी मम्मी हमेशा के लिए दूर कहीं चली गई हैं, वरना तो ये नादान बच्चियां मौत का मतलब भी नहीं समझती थीं. इन्हें फौरीतौर पर जिस प्यार, ममता और हमदर्दी की जरूरत थी, वह मौसी नेहा और मामा देवा राम से भी मिल रही थी.

हैवान बना बाप

बीती 19 सितंबर को पुरखाराम अपनी ससुराल पहुंचा और ससुराल वालों से कहा कि वे नेहा की शादी उस से कर दें, जिस से उसे और बेटियों को सहारा मिल जाएगा. सौतेली मां से अच्छी तो सगी मौसी होती है.

ससुराल वालों के मना करने के बावजूद भी वह नेहा से ही शादी करने की जिद पर अड़ गया. कोई और बात होती तो शायद वे सोचते भी, लेकिन कुछ दिन पहले ही नेहा की शादी एक अच्छा घरवर देख कर तय कर दी गई थी, इसलिए उन्होंने साफ इनकार कर दिया था.

खुद नेहा की मरजी भी अपने जीजा से शादी करने की नहीं थी, इसलिए पुरखाराम की जवान और खूबसूरत साली को बेटियों की आड़ में पाने की ख्वाहिश अधूरी रह गई.

ससुराल से बैरंग लौटे हवस के मारे इस शख्स से यह इनकार बरदाश्त नहीं हुआ, क्योंकि वह उन लोगों में से था, जो साली को आधी घरवाली समझते हैं और मौका मिले तो पूरी बनाने से भी नहीं चूकते. आतेआते वह लड़झगड़ कर अपनी चारों बेटियों को भी साथ ले आया था. उस का घर जो ससुराल से चंद मिनटों की दूरी पर ही था, वहां आ कर उस ने एक वहशियाना फैसला ले लिया.

तिलमिलाए पुरखाराम ने फूल सी अपनी चारों बेटियों को दवा पिलाने के नाम पर उन्हें कीटनाशक जहर पानी में घोल कर पिला दिया और 1-1 कर के उन्हें घर में बनी पानी की टंकी में डाल दिया. कुछ ही देर में उन मासूमों ने दम तोड़ दिया.

पुरखाराम को यह लग रहा था कि अगर ये बेटियां नहीं होतीं, तो नेहा या कोई दूसरी लड़की उस से शादी करने के लिए तैयार हो जाती, क्योंकि कुछ गांव वालों के मुताबिक, उस ने 2 लाख रुपए शादी कराने वाले दलालों को दिए थे, लेकिन उस से कोई लड़की शादी करने को राजी नहीं हो रही थी और दलाल भी पैसे डकार कर छूमंतर हो गए थे.

साफ दिख रहा था कि पुरखाराम की नीयत और मंशा सिर्फ जैसे भी हो जल्द से जल्द शादी कर लेने की थी. मासूम बेटियों की तो उसे चिंता ही नहीं थी, अगर होती तो वह इतनी बेरहमी से उन की हत्या नहीं करता.

इस वारदात को अंजाम देने के बाद पुरखाराम को लगा कि वह पकड़ा जाएगा, तो डर के मारे उस ने भी जहर पी लिया और उसी टंकी में कूद गया, लेकिन कुछ लोगों ने उसे देख लिया और बचा लिया, पर टंकी में 4 मासूमों की लाशें देख कर गांव में कोहराम मच गया.

पुलिस आई तो बच्चियों की लाशें पोस्टमार्टम के लिए अस्पताल भेज दी गईं और पुरखाराम को इलाज के लिए

Mr. Cook®
Pressure Cookers
देश के कुकर में ही आता है देश के खाने का स्वाद...
United Metalik Private Limited
Visit Our Website: www.unitedgrouponline.com

SULABH
BRONKO CURES
बच्चों के ब्रॉंकाइटिश न्यूमोनियाँ, दमा दमफूली, हावा-डावा की अत्युत्तम औषधि।
आजमाइश कर देखें...
JHACTIONS HOMOEO PVT. LTD.
Ph.: 9973516445
www.jhactionshomoeo.com
सभी होमियोपैथी स्टोर्स पर उपलब्ध

अस्पताल में भरती करा दिया गया.

सालियां क्या करें

नेहा ने कोई गलत फैसला नहीं लिया था, यह तो उस के जीजा की करतूत से उजागर हो ही गया, जो वहशी, जिद्दी और कमजोर भी था. हर लड़की को शादी और दूसरे निजी मामलों में फैसले लेने का हक है, लेकिन कई बार हालात ऐसे बन जाते हैं कि मन मार कर जीजा से शादी करनी पड़ती है. कुछ मामलों में यह फैसला ठीकठाक साबित होता है, तो कइयों में गलत भी निकलता है.

विदिशा की निशा (बदला हुआ नाम) की मौत एक बीमारी के चलते हुई थी, जिस का 3 साल का बेटा था. उस के क्रियाकर्म के बाद घर और समाज वालों ने फैसला लिया कि निशा की छोटी बहन आशा (बदला हुआ नाम) को जीजा से शादी कर लेनी चाहिए. इस से बच्चा सौतेली मां की परछाईं से बचा रहेगा और खर्च भी कम होगा.

घर और समाज वालों के दबाव में आ कर आशा ने हां कर दी, क्योंकि वह अपनी बहन और उस के बेटे को बहुत चाहती थी. उस के जीजाजी भी ठीकठाक आदमी थे.

पुरखाराम (इनसैट में) और उस की 4 बेटियां अपनी मां के साथ

लेकिन शादी के 2 साल बाद ही बात बिगड़ने लगी, क्योंकि आशा अपनी कोख से भी बच्चे को जन्म देना चाहती थी. इस पर उस के पति यानी पहले के जीजा ने साफ इनकार कर दिया कि तुम्हारा खुद का बच्चा हो जाएगा, तो तुम मेरे बच्चे पर ध्यान नहीं दोगी और उस से सौतेला बरताव करोगी.

आशा ने पति को समझाने की कोशिश की कि मेरा बच्चा भी तो आप का ही होगा. इस पर वह बेरुखी से बोला कि मुझे तो बच्चे के लिए मुफ्त की आया और खुद की सैक्स संतुष्टि के लिए एक औरत चाहिए थी, इसलिए तुम से शादी करने के लिए राजी हो गया, कोई दूसरी लाता तो दिक्कत और फसाद खड़े होते.

अब आशा को अपनी हैसियत और पति की असलियत का एहसास हुआ कि उस का तो कोई वजूद ही नहीं है, उस की भावनाओं और ख्वाहिशों के कोई माने ही नहीं हैं, वह तो एक मुफ्त की नौकरानी और किराए की मां है, जिस का काम चूल्हाचौका, घर की साफसफाई और बच्चे की परवरिश करने के अलावा रात को बिस्तर में पति को खुश करना भर है.

आशा कहती है कि अब उस के नाम के मुताबिक जिंदगी में कोई आशा ही नहीं बची है, वह तो अब चलतीफिरती लाश बन कर रह गई है.

जीजासाली का रिश्ता बड़ा अहम और हंसीमजाक का माना जाता है, लेकिन इस में एहतियात खासतौर से सालियों को रखना जरूरी है. मसलन, ज्यादा हंसीमजाक ठीक नहीं रहता. इस के अलावा जीजा की नाजायज हरकतों को हवा देना भी महंगा पड़ता है.

कई सालियां तो जीजा से प्यार कर बैठती हैं और उन्हें अपना शरीर भी सौंप देती हैं, जो अपनी ही बहन का घर उजाड़ने और उस की खुशियों पर डाका डालने जैसी बात है. इस से साली को भी कुछ हासिल नहीं होता और कई बार शादी हो जाने के बाद ये नाजायज ताल्लुकात खुद का भी घर उजाड़ देते हैं.

लेकिन सिचुएशन जब नेहा और आशा जैसी हो जाए तो सालियों को अपने दिमाग से सहीगलत देखते हुए जीजा से शादी करने का फैसला लेना चाहिए, क्योंकि इस बात की कोई गारंटी नहीं कि जीजा एक अच्छा पति साबित होगा ही. ●

क्या शराब ? लीवर खराब

वैद्य सत्य नारायण धौली प्याऊ मथुरा ने एक साक्षात्कार में बताया कि लिवर (यकृत) शरीर का बहुत प्रमुख अंग है। भोजन को पचाना तथा शुद्ध रक्त का निर्माण करना यकृत (लिवर) का मुख्य कार्य है ।जो लोग शराब पीते हैं उनके यकृत प्लीहा में प्रायः शोथ (सूजन) उत्पन्न हो जाती है जिसके कारण पेट में दर्द की शिकायत शुरू हो जाती है। खाना हजम नहीं होता, कभी दस्त तो कभी कब्ज होने लगता है। बहुत ज्यादा समय होने पर पीलिया जैसी जानलेवा तथा कमजोरी देने वाली बीमारियाँ शुरू हो जाती हैं। हमारा कथन है कि लोग शराब पीना छोड़ दें, यदि नहीं तो कम से कम अपने लिवर (यकृत) का विशेष ध्यान रखें। ''यकृत शोधन'' भाप से बनी वो औषधि हे जो खाना खाने के बाद सुबह–शाम 4–4 चम्मच आधा गिलास पानी में पी जाती है। जिसका असर 12 घंटे में शुरू हो जाता है, सुबह को काला–काला मल निकलना शुरू हो जाता है और यकृत की शुद्धि प्रारम्भ हो जाती है। ''यकृत शोधन'' यकृत–प्लीहा के शोथ (एन्लार्जमेन्ट) में बहुत लाभकारी है। ''पाचन अमृत सुधा'' 8 चम्मच में 3 से 5 ' 'यकृत शोधन'' मिलाकर खाना खाने के तुरन्त बाद पीने से दो गुना लाभ होता है।

नोट : बच्चों को भी '' यकृत शोधन'' लिवर (यकृत) रोगों में दिया जा सकता है।

उपलब्ध न होने पर 9258040152 पर प्रातः 10 से सायं 5 बजे तक आर्डर बुक करायें।

सभी प्रकार की आयुर्वेदिक औषधियों के कुछ विक्रेताओं के नम्बर

बिहार–0612–2673987, झारखण्ड–9771390698, उ.प्र.–लखनऊ–9415768958, इलाहाबाद–9236011955, कानपुर–9839940626, आगरा–9412166680, अलीगढ–9837843430, गोरखपुर–9336400742, बरेली–इमदाद हुसैन–9411070751, शाहजहांपुर–9450442978, मेरठ–9837270117, 0124135025, 9212771106, कोलकाता–09432485534, 07278040890, दिल्ली–9810386276, 9899161855, राजस्थान–9413381007, 9413381008, छत्तीसगढ़–9301315674, मध्य प्रदेश–उज्जैन–09826284858, इन्दौर–0731–2463274, 9098144825, भोपाल–09893257976, जबलपुर–09424686874, पंजाब–जालंधर–01679–231670, 501670, 9417331070, हरियाणा–फतेहाबाद–09812446363, रोहतक–09812341685, 09466278067, 08901387927, फरीदाबाद–01292417565

जागरूकता :

सड़क हादसे और ट्रक ड्राइवर

देवेंद्रराज सुथार

देश में सड़क हादसों की बढ़ती तादाद पर लगाम लगाने के लिए केंद्रीय सड़क परिवहन और राजमार्ग मंत्री नितिन गडकरी ने कहा है कि ट्रक ड्राइवरों के लिए ड्राइविंग का समय तय किया जाना चाहिए. इस के साथ ही सैंसर की मदद से उन की नींद का भी पता लगाया जाना चाहिए, ताकि देश में बढ़ते सड़क हादसों को रोका जा सके.

कई घंटे की ड्राइविंग, इंजन की गड़गड़ाहट और सड़क पर 14 पहियों की आवाज... इस सब में ट्रक ड्राइवर के लिए थकान का सामना करना मुश्किल हो जाता है.

गाड़ी चलाते समय थकान से जूझना, नींद न आना ये सामान्य सी समस्याएं हैं, जिन से ट्रक ड्राइवर जूझते रहते हैं, लेकिन आज की भीड़भाड़ वाली सड़कों पर ये ट्रक ड्राइवर सड़क पर चलने वाले दूसरे लोगों के लिए बेहद खतरनाक साबित हो रहे हैं.

उदाहरण के तौर पर, दक्षिण अफ्रीका में जनवरी, 1981 और मार्च, 1994 के बीच 34 फीसदी से ज्यादा हादसे गाड़ी चलाते समय ड्राइवर के सो जाने की वजह से हुए. थकान बढ़ने से उनींदापन होने लगता है और इस का असर शराब के नशे के समान होता है.

थकान से जुड़े इन हादसों के पीछे की बड़ी वजह को हमें ट्रक ड्राइवरों द्वारा काम किए गए कुल घंटों के रूप में देखना होगा, जिस में न केवल ड्राइविंग बल्कि दूसरे काम भी शामिल हैं.

ये काम के घंटे अकसर लंबे और अनियमित होते हैं. ज्यादातर ट्रक ड्राइवर शुरू से आखिर तक अपने दम पर काम को पूरा करना पसंद करते हैं, जिस का मतलब यह है कि किसी भी मौसम में ग्राहक को सामान पहुंचाना.

कार्य कुशलता तय की गई दूरी और पहुंचाए गए माल से मापी जाती है. काम के घंटे औसत से ऊपर हो सकते हैं. जरमनी में कई ट्रक ड्राइवर हफ्ते में तकरीबन 40 घंटे से कम तो कई ट्रक ड्राइवर इस से दोगुने से भी ज्यादा काम करते हैं.

ऐसे ही हालात दूसरे देशों में भी हैं. दक्षिण अफ्रीका में वेतन कम है, इसलिए ड्राइवर अपनी कमाई बढ़ाने के लिए ड्राइविंग में ज्यादा समय लगाते हैं.

भारत की रिपोर्ट बताती है कि परिवहन कंपनियां ड्राइवरों को अपना सफर पूरा करने के लिए पूरा समय देती हैं, लेकिन कई ड्राइवर ऐक्स्ट्रा माल को दूसरी जगहों पर पहुंचा कर अपनी आमदनी बढ़ाते हैं. यह ज्यादा ड्राइविंग समय की मांग करती है. फिर उन्हें समय पर कंपनी में लौटने के लिए नींद में कटौती करनी पड़ती है.

यूरोपीय संघ में कानून द्वारा अनुमानित अधिकतम घंटों का इस्तेमाल कर के एक ट्रक ड्राइवर हफ्ते में तकरीबन 56 घंटे तक ड्राइव कर सकता है, लेकिन अगले हफ्ते उसे सिर्फ 34 घंटे तक ही गाड़ी चलाने की इजाजत है. लोडिंग और अनलोडिंग समेत उस के काम के घंटे एक निरीक्षण मशीन द्वारा दर्ज किए जाते हैं.

एक दूसरी वजह भी ड्राइविंग के समय को प्रभावित करती है, वह है ट्रक मालिक का रवैया. जब काम के घंटे ज्यादा होते हैं, तो थकान होने लगती है. ऐसा तब भी होता है, जब वे असामान्य समय में सफर शुरू करते हैं.

उदाहरण के लिए, रात के एक बजे से सुबह के 4 बजे के बीच काम शुरू करना सामान्य है. यह वह समय होता है, जब कई ड्राइवर बहुत बेचैन होते हैं और उन की एकाग्रता सब से कम होती है. दबाव तब बनता है, जब ग्राहक कंपनियां स्टौक में कम माल रखती हैं और मांग करती हैं कि सामान समय पर पहुंचाया जाए.

इस का मतलब है कि ड्राइवर को सामान ले कर ग्राहक तक सही समय पर पहुंचना होता है. बिजी यातायात, खराब मौसम और खराब सड़कों के चलते देरी होती है, जिस की भरपाई ड्राइवर को किसी न किसी रूप में करनी पड़ती है.

एक जापानी कंपनी एक वीडियो कैमरे का इस्तेमाल कर के एक इलैक्ट्रौनिक मशीन पर काम कर रही है, जो यह नोट करती है कि ड्राइवर कितनी देर तक अपनी आंखें झपकाता है. अगर बारबार पलकें झपकती हैं, तो एक रिकौर्ड की गई आवाज उसे उस की खतरनाक हालत के बारे में चेतावनी देती है.

एक यूरोपीय कंपनी भी एक ऐसे ही उपकरण पर काम कर रही है, जो यह नोट करता है कि किसी गाड़ी को कितनी सटीकता से चलाया जा रहा है. अगर ट्रक हिलता है, तो केबिन में एक चेतावनी सुनाई देती है. लेकिन प्रभावी साधन उपलब्ध होने में कुछ समय लगेगा. तकरीबन हर गाड़ी में थकान एक बिन बुलाई और अप्रिय यात्री रही है. लेकिन सवाल यह है कि इस से छुटकारा कैसे पाया जाए?

कुछ ट्रक ड्राइवर तो भारी मात्रा में कैफीनयुक्त पेय पीते हैं, लेकिन थकान फिर भी उन्हें रोक नहीं पाती है. वे दूसरे उत्तेजकों का इस्तेमाल करते हैं. कहने की जरूरत नहीं है कि ये चीजें सेहत के लिए बहुत ही ज्यादा खतरनाक हैं. मैक्सिको में कुछ ड्राइवर जागते रहने के लिए मिर्च खाते हैं.

शुरुआती चेतावनी के संकेतों को पहचान कर कई लोगों की जान बचाई जा सकती है. अमेरिका में नैशनल ट्रैफिक सेफ्टी बोर्ड के एक अध्ययन में भयानक आंकड़े सामने आए कि 107 हादसों में कोई दूसरी गाड़ी शामिल नहीं थी, जबकि 62 हादसे थकान से संबंधित थे.

भारत में ट्रक ड्राइवरों के लिए अभी तक कोई सुरक्षा मानक नहीं है. अमेरिका और ब्रिटेन की बात करें, तो वहां यह तय होता है कि एक ट्रक ड्राइवर एक दिन में कितने घंटे और कितने किलोमीटर तक ड्राइव करेगा.

ट्रक ड्राइवर के लिए एक निश्चित अंतराल पर आराम करना बहुत ही जरूरी है. लंबी दूरी के ट्रक ड्राइवरों को सफर के बाद कुछ दिनों के लिए आराम करने की जरूरत होती है.

हर ट्रक ड्राइवर और उस के ट्रक का हर मिनट का डाटा सरकारी रेगुलेटर तक पहुंचता रहता है, इसलिए किसी भी तरह से नियमों के उल्लंघन की कोई गुंजाइश नहीं रहती है.

भारत के मामले में केंद्रीय सड़क परिवहन और राजमार्ग मंत्री नितिन गडकरी का सुझाव थकान के चलते बढ़ते हादसों को रोकने और सड़क सुरक्षा की दिशा में रास्ता मजबूत करता है. इस पर गंभीरता से सोचविचार किया जाना चाहिए. ●

Divisa

NO.1 BRAND

20% EXTRA
Divisa
Dr. Juneja's
पेट सफा
Natural Laxative GRANULES
EFFECTIVE RELIEF FROM CONSTIPATION
Ayurvedic Proprietary Medicine
Safe for daily use

No More CONSTIPATION!

*If you are suffering from **Constipation, Gas or Acidity,** then use **'Pet Saffa' Ayurvedic Granules/Tablets** today only. Pet Saffa tastes good and doesn't stick in the mouth. It is non-habit forming and shows results from the first day.*

Raju Srivastav

- CONSTIPATION
- ACIDITY
- GAS

Dr. Juneja's ®

पेट सफा

Natural Laxative Granules & Tablets

24x7 Helpline: 91197 88888 • www.petsaffa.com
Available at all medical & general stores

20% EXTRA
पेट सफा

पढ़ाई से मुंह मोड़ती नौजवान पीढ़ी

वेणी शंकर पटेल 'ब्रज'

मौजूदा दौर में स्कूली पढ़ाईलिखाई इस तरह की हो गई है कि सिलेबस में लिखी बातों को रट कर इम्तिहान तो पास किए जा सकते हैं, पर पेट भरने के लिए वह किसी काम के काबिल नहीं बना पा रही है. स्कूली पढ़ाईलिखाई के सिस्टम में सुधार की जरूरत है, पर सरकार इस बात को नजरअंदाज कर रही है.

यही वजह है कि पढ़ाईलिखाई की नई नीति में बुनियादी और व्यावसायिक तालीम को उतनी तवज्जुह नहीं दी गई, जितनी जरूरी थी. लगातार यह देखा जा रहा है कि नौजवान पीढ़ी की दिलचस्पी पढ़ाईलिखाई के प्रति घटती जा रही है.

शिक्षा मंत्रालय की साल 2018-19 की रिपोर्ट के आंकड़े बताते हैं कि मध्य प्रदेश में हायर सैकेंडरी तक पहुंचते ही 76 फीसदी बच्चे सरकारी स्कूल छोड़ देते हैं. इन में लड़कों की तादाद ज्यादा होती है.

जानकारों के मुताबिक, यह वह दौर होता है, जब छात्रों का पूरा ध्यान कैरियर पर होता है. वहीं, माध्यमिक लैवल के बाद 58 फीसदी बच्चे स्कूल बदल लेते हैं.

मध्य प्रदेश उन राज्यों में शामिल है, जहां बच्चों की सरकारी स्कूल छोड़ने की दर बहुत ज्यादा है. इस से पता चलता है कि स्कूली पढ़ाईलिखाई का लैवल प्रदेश में कैसा है.

पहली जमात से 5वीं जमात तक सरकारी स्कूलों में 85 फीसदी बच्चे पढ़ते हैं. यहां बच्चों के स्कूल छोड़ने की दर 42 फीसदी हो जाती है.

इसी तरह उच्च शिक्षा के लिए माध्यमिक शिक्षा में तो स्कूल छोड़ने की दर 76 फीसदी हो जाती है. इन में से 24 फीसदी लड़कियां होती हैं.

शिक्षा के प्रति नौजवानों का मोह भंग होने वाली वजहों की पड़ताल करने पर एक बड़ी बात यह सामने आई है कि नौजवानों को यकीन हो गया है कि पढ़ाईलिखाई में जो सिखाया जा रहा है, उस का प्रैक्टिकल तौर पर कहीं इस्तेमाल नहीं है.

बड़ी समस्या यह है कि पढ़ने के बाद भी ऐसी नौकरियां या व्यवसाय कम हैं, जिन में पढ़ाई की जरूरत होती ही हो. सारा समाज ऐसे अधपढ़ों का बनता जा रहा है, जहां पढ़ने वाले कम हैं और देश की उत्पादकता को भी बढ़ने नहीं दे रहे हैं.

कोरोना काल में बिना इम्तिहान दिए हाईस्कूल पास होने वाला 18 साल का रोहित गुप्ता कालेज जाने के बजाय अपने पिता की परचून की दुकान संभालने लगा है.

जब रोहित गुप्ता से आगे की पढ़ाई के बारे में बात की, तो वह कहने लगा, "पढ़लिख कर कहां नौकरी मिलनी है, इसलिए अभी से दुकान पर ही पूरा समय दे कर मैं अपने पिता की मदद करता हूं."

सिरसिरी गांव का ललित राजपूत 10वीं जमात पास कर आईटीआई डिप्लोमा कर के इलैक्ट्रिशियन बनना चाहता है, पर आईटीआई में दाखिले के लिए 10वीं जमात में 75 फीसदी अंक न होने से वह इलैक्ट्रिक उपकरणों की दुकान पर यह काम सीख रहा है.

वजह पूछने पर ललित राजपूत ने बताया कि पढ़ाईलिखाई में उस का मन ही नहीं लगता, क्योंकि गांव के स्कूल में पिछले 6 सालों से एक शिक्षक ही पढ़ाने के लिए हैं, जो सभी सब्जैक्ट की पढ़ाई नहीं करवा पाते.

बिजली के उपकरणों की मरम्मत का काम सीख रहा ललित अपने घरपरिवार के लिए दो पैसे कमा कर देना चाहता है.

खेतीबारी के बारे में अच्छी पढ़ाई की चाहत रखने वाले नरसिंहपुर जिले के बरहटा स्कूल में पढ़ रहे पवन अहिरवार बताता है कि स्कूल में किताबें तो पढ़ा दी जाती हैं, मगर कभी खेतखलिहान में जा कर कोई प्रैक्टिकल जानकारी नहीं दी जाती है. स्कूली किताबों में कहीं यह नहीं पढ़ाया जाता है कि बिजली फिटिंग, प्लंबर, मोटर मेकैनिक के कामों में कैसे महारत हासिल की जा सकती है. यही वजह है कि पढ़ाईलिखाई पूरी करने के बाद नौजवानों को जब नौकरी नहीं मिलती, तो वे किसी काम के नहीं रहते.

आज भी देश में ऐसे अनपढ़ों की पौध है, जो नकारा बनी मोबाइल फोन पर उंगलियां घुमा रही है. सरकारी नीतियां भी यही चाहती हैं कि देश के नौजवान धार्मिक आडंबरों और अंधविश्वास में उलझे रहें.

सरकार नहीं चाहती कि नौजवानों में सवाल करने और सहीगलत का फर्क करने की ताकत बढ़े. धर्म के रंग में रंगी सरकार तो बस यही चाहती है कि नौजवान उन की रैलियों में आंख मूंद कर झंडे, बैनर लगा कर उन की गलत नीतियों का गुणगान करें.

होशंगाबाद जिले की पिपरिया तहसील के अनिल सोनी 12वीं तक की पढ़ाई के बाद एक राजनीतिक पार्टी के मीडिया प्रभारी हैं. वे दिनभर सोशल मीडिया पर अपनी पार्टी के नेताओं का गुणगान करते हैं. विधायक और पार्टी नेताओं के आगेपीछे घूमते वे देश के हालात बदल देने की वकालत करते हैं.

टिमरनी हरदा के आदिक लाल पटेल आज से 25 साल पहले बीटैक की पढ़ाई अधूरी छोड़ कर इसलिए गांव आ गए थे कि उन की जिन कामों में दिलचस्पी थी, वे स्कूल में नहीं सिखाए जाते थे.

गांव आ कर उन्होंने मोटर वाइंडिंग का काम सीखा और इन 25 सालों में आज पूरे इलाके के वे हुनरमंद मेकैनिक हैं. किसानों के खेत में चलने वाले मोटर पंप के जलने पर उन की वाइंडिंग से उन्हें खूब पैसा मिलता है. अपने काम और हुनर के दम पर उन के पास आज सभी तरह की सुखसुविधाएं हैं.

रायसेन जिले के उदयपुरा के कमलेश पाराशर मैट्रिक तक पढ़े हैं. गांवदेहात के इलाकों में उन की पंडिताई फैली हुई है. वे बताते हैं कि उन्होंने अपने लड़के को 10वीं पास करते ही संस्कृत पाठशाला में दाखिला दिला दिया था.

जब तक समाज में धर्म का बोलबाला है, उन की पंडिताई की दुकान खूब चलेगी. पुरखों के जमेजमाए इस धंधे को अपने बेटे को सौंप देंगे. इस में कमाई के साथसाथ इज्जत भी मिलती है.

मध्य प्रदेश के स्कूल शिक्षा विभाग के मंत्री इंदर सिंह परमार भी स्वीकार करते हैं कि हमारे लिए ये हालात चुनौती से भरे हैं. पहली जमात में जितने बच्चे दाखिला लेते हैं, 12वीं जमात में पहुंचतेपहुंचते 24 फीसदी बच्चे ही बचते हैं. लेकिन सुधार के लिए

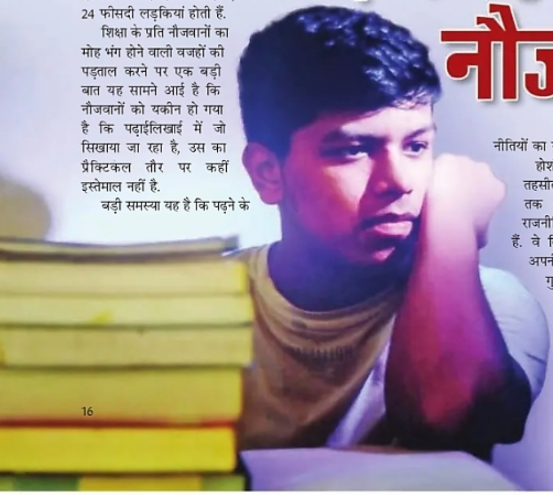

कोई खास नीति सरकार के पास नहीं है.

होशंगाबाद के पत्रकार मनीष अहिरवार कहते हैं कि एससीएसटी तबके के होनहार बच्चे पढ़लिख कर डाक्टर या इंजीनियर बनने का सपना देखते हैं, मगर मैडिकल और इंजीनियरिंग कालेज की भारीभरकम फीस उन के सपनों को पूरा नहीं होने देती. सरकार की आरक्षण नीति का फायदा इस तबके के वे चुनिंदा लोग ही ले पाते हैं, जो पहले से नौकरियों में हैं.

स्कूलों में जरूरी सुविधाओं का अकाल पड़ा है. आज भी कई स्कूल ऐसे हैं, जहां पर पढ़ाईलिखाई के कमरे, पीने के लिए साफ पानी और शौचालय भी नहीं हैं. लड़कियों के स्कूल छोड़ने की एक बड़ी वजह यह भी है. माहवारी से जुड़ी समस्याओं के चलते वे स्कूल आने से कतराती हैं.

पढ़ाई काम न आई

आज पूरा देश कोरोना के संकट से जूझ रहा है. ऐसे समय में हमारे स्कूलकालेजों की पढ़ाई की अहमियत की कोई कीमत नहीं रह गई है.

स्कूलकालेज की पढ़ाई का आलम यह है कि एक इलैक्ट्रिकल इंजीनियर अपने घर का फ्यूज नहीं बदल सकता, वैसे ही बीएससी, एमएससी पढ़े छात्रछात्रा अपने घर के किसी सदस्य को इंजैक्शन तक लगाने का हुनर नहीं जानते. फिर 15-20 साल स्कूलकालेजों में बरबाद करने के बाद हमें कौन सी पढ़ाई मिलती है? हमारे अपनों की जिंदगी मुसीबत में हो और उस से निबटने का कोई हुनर हमारे स्कूलकालेजों में नहीं सिखाया जाता हो, तो ऐसे स्कूलों का क्या फायदा?

अच्छा तो यह होता कि धर्म की कपोल कल्पित कथाकहानियों को पढ़ाने के बजाय ये स्कूल हमें इस बात की ट्रेनिंग देते कि मरीज का ब्लड प्रैशर कैसे नापा जाता है, औक्सिजन की सैचुरेशन कैसे चैक की जाती है. औक्सिजन मशीन, बाई पैप मशीन कैसे लगाते हैं, नैबुलाइजेशन कैसे करते हैं जैसी बातें सिखानी चाहिए.

सिविल डिफैंस में बाढ़, आग, भूकंप से जिंदगी कैसे बचा सकते हैं, हमें यह सिखाया जाता तो आफत की घड़ी में ये सचमुच समाज के काम आ सकते थे, मगर स्कूलों ने हमें यह सब नहीं सिखाया.

कोरोना के मरीजों की तादाद देख कर साफ है कि मजबूरन लोगों को उन के घरों पर ही अस्पताल जैसा इलाज देना होगा. वैसे भी कोरोना के मरीज को किसी किस्म की सर्जरी की जरूरत आमतौर पर नहीं पड़ती, इसलिए अस्पताल की उपयोगिता सिर्फ समय से इंजैक्शन लगाने, औक्सिजन देने और डाक्टर की निगरानी की है.

कुछ मामलों में हालत बिगड़ने पर वैंटिलेटर की जरूरत पड़ती है, लेकिन ज्यादातर मरीज औक्सिजन और बाई पैप मशीन के सहारे ही उठ खड़े होते हैं.

बाई पैप मशीन तेजी से हवा फेंकने वाली एक साधारण मशीन है, जिस की कीमत बमुश्किल 25,000 से 30,000 रुपए होती है. यह मशीन प्रैशर से हवा फेंकती है, जिस से मरीज को सांस लेना ही पड़ता है.

बहुत से लोग इस मशीन को खरीद सकते हैं, घर पर किराए पर लगवा सकते हैं, मगर लगाने वाले टैक्नीशियन कंपाउंडर कहां से लाएंगे? हमारे पास ट्रेंड कंपाउंडर हैं ही नहीं और जो थोड़ेबहुत हैं, वे अस्पतालों को ही कम पड़ रहे हैं.

पढ़ाईलिखाई का मतलब उपयोगी नागरिक तैयार करना होना चाहिए, चाहे खेती हो, उद्योग हो, अनुसंधान, रक्षा या जीवन उपयोगी काम हो, लेकिन आज की पढ़ाईलिखाई पढ़ेलिखे नकारा नौजवानों की फौज खड़ी कर रही है, जो राजनीतिक पार्टियों की रैली में झंडाबैनर लगा कर और धार्मिक सत्संग, कांवड़ यात्रा और भोजभंडारा करने में अपनी ऊर्जा गंवा रही है.

लिहाजा, बेरोजगार नौजवान एक बात गांठ बांध लें कि किसी काम को सीखने के लिए 6 महीने से ले कर एक साल तक का समय होता है, चाहे मोटरकार, साइकिल मेकैनिक बनने की बात हो. डेरी फार्मिंग, मधुमक्खीपालन, खेतीबारी से जुड़े काम भी सीख सकते हैं.

वे घर की इलैक्ट्रिक वायरिंग, प्लंबर, वेल्डिंग का काम, मोबाइल रिपेयरिंग, मिट्टी के बरतन बनाना सीख सकते हैं. कुछ ही महीनों में नौजवान बहुत से ऐसे काम सीख सकते हैं, जो घरपरिवार को भूखा नहीं सोने देंगे.

आज भारत में सब से ज्यादा दुखी वे लोग हैं, जो बहुत ज्यादा पढ़लिख कर छोटेमोटे काम करना पसंद नहीं करते हैं. जो पढ़ाईलिखाई नौजवानों को रोजगार न दे सके, वह किसी काम की नहीं.

रोजगार के लिए ज्यादा पढ़ालिखा होना कोई माने नहीं रखता, बल्कि तरहतरह के हुनर सीख कर अपने परिवार की जिम्मेदारियों को बखूबी उठाया जा सकता है. ●

ORIENTAL CHEMICAL WORKS
CELEBRATING 92 YEAR OF ESTABLISHMENT 1929 2021
RAU, INDORE
दाद, खाज खुजली है?
हमें भी होती है
दाद, खाज, खुजली से तुरंत आराम
जालिमलोशन®
Fastest > Trusted > Tested
...पीढ़ियों से
मेडिकल स्टोर से तुरंत खरीदें
ZALIM LOTION
For Ringworm and Itches
Retailers may also buy online : www.zalimlotion.in ✉ zalimlotion1929@gmail.com
ANIL PUB.

कब होगा अग्निसंस्कार

भावना ठाकर

एक शब्द है 'रंडी', जो कुछ मर्दों की जबान से फिसल कर औरतों की इमेज को गंदगी में तबदील करता हुआ बातोंबातों में तीर की तरह छूटता है, वह कली के पूरे वजूद को भी नासूर की तरह जिंदगीभर चुभता रहा.

बचपन से ले कर जिंदगी का आधा सफर कटने तक 'रंडी' शब्द पहरन की तरह कली से लिपटा रहा. कली को लगता है कि शायद हर औरत का उपनाम बन गया है यह 'रंडी' शब्द.

छोटी सी बात पर 2 परिवारों में झगड़ा होना, गालीगलौज, मारपीट और लड़ाइयां नन्ही कली बचपन से देखती आ रही है. छोटी थी तब वह सहम जाती थी, पर एक शब्द कली के नाजुक मन में घर कर गया... 'रंडी'.

हर मर्द की जबान पर बातबात पर यह शब्द सुन कर कली सोचती, 'यह 'रंडी' का मतलब क्या होता होगा? क्यों झगड़ा करते समय हर कोई इस शब्द का इस्तेमाल करता है?'

एक दिन कली का बापू दारू पी कर आया और कली ने कुछ मांगा, तो 'हट रंडी, जब देखो कुछ न कुछ मांगती रहती है,' कह कर उसे लताड़ दिया.

कली को बापू ने डांटा, उस का बुरा नहीं लगा, पर 'रंडी' शब्द अखर गया. 11 साल की कली ने अपनी मां से पूछा, "मां, यह 'रंडी' का मतलब क्या होता है? बताओ न?"

मां ने पहले तो कली को चांटा जड़ दिया और फिर कहा, "खबरदार, जो ऐसे शब्दों का जिक्र भी किया. यह शब्द गंदी और धंधा करने वाली औरतों के लिए इस्तेमाल होता है."

कली को हैरानी हुई कि अगर यह गंदा शब्द है, तो हर कोई क्यों एकदूसरे को 'रंडी की औलाद' और 'रंडी' शब्द को जोड़ कर न जाने क्याक्या कहता रहता है और बापू क्यों बातबात पर मुझे और मां को 'रंडी' बोलते हैं?

मां तो परिवार के लिए सारे काम करती है, फिर भी वह क्यों सहन कर लेती है? मां तो गंदे काम नहीं करती, फिर क्यों बापू की जबान पर मां के लिए यह शब्द आता है?

कली की उम्र के साथसाथ यह शब्द भी बड़ा होता गया. इतना बड़ा कि हर तबके के मर्दों की जबान की शोभा बन गया. अब तो भाई भी बातबात पर भाभी को या किसी और को 'रंडी' शब्द से नवाज देता था.

कली सोचती रहती थी, 'क्यों कोई औरत 'रंडी' शब्द सुन कर विद्रोह नहीं करती? क्यों सब ने खुद को इस शब्द के भीतर ढाल लिया है? औरत तो औरत, कोई मर्द भी इस मुद्दे पर लाठी और मशाल ले कर क्यों नहीं निकलता?

'वैसे तो लोग हर छोटीबड़ी बात का विरोध करते हुए दंगेफसाद तक करवा लेते हैं, पर क्यों वे अपनी मां, बहन, बेटी को दिए गए इस उपनाम का विरोध नहीं करते? इस का मतलब तो यह हुआ कि सारी औरतें गंदी और धंधा करने वाली हैं. पर कौन सा धंधा गलत होता है? क्या काम करने पर औरतों को 'रंडी' कहा जाता है?'

कली को ऐसे सवालों का कोई जवाब नहीं मिलता था. इस शब्द को सुनते हुए पलीबढ़ी कली की अब शादी हो गई थी. थोड़ी समझ भी आ गई थी.

कली का स्वभाव थोड़ा विद्रोही और मुखर था. ससुराल वाले औरतों को दबा कर, चुप करा कर पैरों की जूती समझ कर रखने वाले थे. हर छोटीबड़ी बात का विरोध करने पर पति प्रकाश भी कली को उसी 'रंडी' उपनाम से नवाजता. कभी 'रंडी' तो कभी 'छिनाल' कह कर कली को पीटता.

अब कली की समझ में आ गया था कि 'रंडी' शब्द का मतलब. सिर्फ गलत या गंदे काम करने वाली औरत ही 'रंडी' नहीं कहलाती, बल्कि जो औरत मर्द की मरजी के खिलाफ जा कर एक कदम भी आगे चलने की कोशिश करती है या खुद को मजबूत कर के मर्द को उस की औकात दिखाती है या फिर अपने हक के लिए लड़ती है, वह कुछ मर्दों की नजर में 'रंडी' होती है.

एक दिन कली की 16 साल की ननद रेवा स्कूल से घर लौट रही थी कि कुछ गुंडों ने उस का अपहरण कर लिया और उसे किसी कोठे पर बेच डाला. घर वालों ने बहुत कोशिश की, पर रेवा का कुछ पता नहीं चला.

कली का पति प्रकाश अपनी बहन के लिए परेशान रहता था और इसी शब्द 'रंडी' के साथ सारा गुस्सा कली पर निकालता.

कली को यह सब बहुत अखरता. सालों से इस शब्द ने कली के वजूद को झकझोर कर रख दिया था. वह यह सुनसुन कर अब ऊब चुकी थी.

एक दिन प्रकाश का एक दोस्त घर आया और प्रकाश से बोला, "यार, मैं 2 दिन पहले शहर गया था. वहां तेरी बहन को देखा, जो गुलाब बानो के 'रंडीखाने' पर धंधा कर रही है."

कली की आंखों में रेवा के लिए रोते हुए भी चमक उभरी, होंठों पर हंसी आ गई. वह सोचने लगी कि क्या प्रकाश अपनी बहन को 'रंडी' बोल पाएगा? क्या आवाज उठा पाएगा अपनी बहन को 'रंडी' कहने वालों के खिलाफ या यों ही सदियों से चली आ रही औरतों को 'रंडी' शब्द से नवाजने की परंपरा को दोहराते हुए बहन को भी 'रंडी' शब्द के उपनाम से बुलाता रहेगा? अब तो इस शब्द ने घर को ही घेर लिया है. शायद 'रंडी' शब्द का असली मतलब अब प्रकाश को समझ में आएगा.

प्रकाश अपने दोस्त के दिए हुए पते पर अपनी बहन को ढूंढ़ने गया और गुलाब बानो को पैसे दे कर कहा, "मेरी बहन को छोड़ दीजिए."

गुलाब बानो को पैसों से मतलब था, तो पैसे ले कर वह अपने आदमी से बोली, "ओ कलवा, उस नई 'रंडी' को इस के हवाले कर दे. माल आ गया है."

अपनी बहन के बारे में यह शब्द सुन कर प्रकाश का खून खौल उठा, पर गुस्सा पीते हुए वह रेवा को ले कर घर आ गया.

एक दिन किसी बात पर कली ने कुछ कहना चाहा, तो प्रकाश ने हाथ उठाते कहा, "चुप 'रं...'"

पर प्रकाश के हलक में ही यह शब्द अटक गया और उस ने शर्मिंदा होते हुए कली से कहा, "मुझे माफ कर दे... आज तक तुझे मैं इस 'रंडी' जैसे घटिया शब्द से तोलता रहा, आज उस शब्द का सही मतलब मेरे तनमन को जला रहा है, तो यह तुम औरतों को कितना जलाता होगा.

"आज से मैं जहां भी, जिस के भी मुंह से यह शब्द सुनूंगा, तो उस का विद्रोह करूंगा."

आज कली की रूह से तो पहरन की तरह लिपटा 'रंडी' शब्द उतर गया, पर और न जाने कितनी कलियां इस उपनाम से तिलमिला रही होंगी, छटपटा रही होंगी, कह नहीं सकते. क्या मर्दों की जबान पर मिस्री की तरह चिपके 'रंडी' शब्द का कभी अग्निसंस्कार होगा? ●

8 गुणकारी आयुर्वेदिक तेलों से निर्मित

Dr. Juneja's

डा.ऑर्थो®

Ayurvedic Oil, Capsules, Spray & Ointment

WORLD'S GREATEST BRANDS 2015-16 IUA

SELECTED NO.1 BRAND INDIA 2014

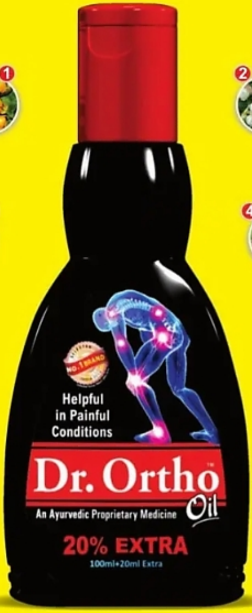
NO.1 BRAND
Helpful in Painful Conditions
Dr. Ortho™ Oil
An Ayurvedic Proprietary Medicine
20% EXTRA
100ml+20ml Extra

ज्योतिष्मती तेल

जोड़ों में सूजन की समस्या को कम करने में मदद करता है।

गन्धपुरा तेल

जोड़ों के दर्द, मांसपेशियों के दर्द और गठिया में सहायक।

निर्गुण्डी तेल

नसों के दर्द और जोड़ों के दर्द में फायदेमंद है।

तारपीन तेल

जोड़ों में सूजन और दर्द के लिए सबसे अच्छा विकल्प है।

पुदीना तेल

पुराने जोड़ों के दर्द की स्थिति में अत्यधिक फायदेमंद है।

कपूर तेल

विभिन्न जोड़ों के दर्द में बहुत उपयोगी है।

अलसी तेल

जोड़ों और मांसपेशियों में सूजन को कम करता है।

तिल तेल

मांसपेशियों और जोड़ों के दर्द को कम करने में मदद करता है।

24x7 Helpline: 7876977777
www.drorthooil.com

8 गुणकारी आयुर्वेदिक तेलों के योग से निर्मित डॉ. ऑर्थो तेल अंदर तक समाकर दर्द को जड़ से कम करने में सहायता करता है। आयुर्वेदिक होने के कारण इसका प्रभाव अल्पकालिक नहीं लंबे समय तक बना रहता है।

समाधान

डा. पूर्णिमा गोयल

भारत में औरतों का बांझ होना सब से बड़ा शाप है और बांझ औरत का पिता होना उस से भी बड़ा शाप है.

ममता के पिता राकेश मोहन किसान मंडी में एक आढ़त पर मुनीम हैं. 10,000 रुपए महीना पगार है और हर महीने 4,000-5,000 रुपए यहांवहां से कमा लेते हैं. सरकारी स्कूल, सरकारी अस्पताल और सरकारी राशन के भरोसे किसी तरह बच्चों को पालपोस कर बड़ा किया.

राकेश मोहन ने अपनी पूरी जमापूंजी से किसी तरह से बड़ी बेटी ममता की शादी रेलवे के ड्राइवर से करा दी थी. सरकारी नौकरी वाले दामाद के लालच में इस शादी पर 5 लाख रुपए खर्च हो गए थे. अब कोई बचत नहीं थी, क्योंकि परिवार में दामाद के आने से दिखावे पर खर्च बढ़ गया था.

राकेश मोहन अपनी छोटी बेटी शिखा को बीऐड कराने के बाद नौकरी मिलने का इंतजार कर रहे थे. उन्हें पूरी उम्मीद थी कि शिखा की सरकारी नौकरी लग जाएगी और उन्हें उस की शादी पर एक पाई भी नहीं खर्च करनी होगी.

फिलहाल तो उन के माली हालात डांवांडोल थे. शिखा की पढ़ाई और मोबाइल का खर्च भी दीदी और जीजाजी से मिलने वाले उपहार पर निर्भर था.

दामाद बड़ी बेटी का पूरा खयाल रखता था. उस तरफ से कोई चिंता नहीं थी. शिखा की शादी में दामादजी पैसे लगा देंगे, एक उम्मीद इस बात की भी थी.

असली मुसीबत या कहना चाहिए कि मुसीबतों का पहाड़ तब टूटा, जब शादी के 2 साल तक ममता मां नहीं बन सकी और इस मुसीबत ने पूरे परिवार को झकझोर दिया.

गनीमत थी कि ममता अपने पति के साथ शहर में रेलवे क्वार्टर में रहती थी. सास के ताने मोबाइल फोन पर उसे बराबर सुनने पड़ते थे.

राकेश मोहन का ममता से भी बुरा हाल था. ममता की सास तलाक की धमकी दे कर उन का खून सुखा देती थी.

ममता की सास के ताने शादी में मनचाहा दहेज न मिलने से शुरू हो कर बच्चा न होने पर खत्म होते थे. ममता के पूरे मायके को अभागा, मनहूस कहा जाने लगा था.

ममता की छोटी बहन शिखा को भी इस झगड़े में लपेट लिया गया. ममता की सास शिखा से कहती थी कि जरूर ममता की परवरिश ठीक से नहीं की गई, बचपन की गलत आदतों के चलते वह बांझ हो गई है.

ममता की सास ने कानूनी सलाह भी ले ली थी. ममता की सास एक दिन कह रही थीं कि कोर्ट में साबित हो जाएगा कि ममता उन के बेटे को शारीरिक सुख और संतान सुख नहीं दे सकती है. इस वजह से उसे आसानी से तलाक मिल जाएगा. उन्हें हर्जाखर्चा नहीं देना होगा.

ममता की मां इन बातों को सुन कर कई दिन तक कुछ भी नहीं खा सकीं. वे यह सोच कर मरी जा रही थीं कि दामादजी ने अगर ममता को छोड़ दिया, तो उस का क्या होगा.

ममता की दूसरी शादी करने के लिए पैसे तो बचे नहीं हैं और फिर दूसरा आदमी शादी करेगा क्यों?

ममता और उस के पति राजीव को डाक्टर ने बताया कि राजीव के वीर्य में शुक्राणुओं की कमी है और उन्हें डोनर शुक्राणुओं से 'इन विट्रो फर्टिलाईजेशन' या 'इंट्रा यूटेराइन इंसैमिनेशन' कराना चाहिए, पर दकियानूसी राजीव तैयार नहीं हुआ. जब अपना खून या अपना वंश नहीं है तो संतान से क्या फायदा?

राजीव के शुक्राणुओं को बढ़ाने के लिए डाक्टर ने 2 महीने तक हर हफ्ते अमोनिया एन 13 इंजैक्शन लगाया, उस के बाद डाक्टर ने उन्हें वीटा कवर और विटामिन डी की गोली खाने को दी और परहेज में एंटीऔक्सिडैंट फूड लेने के लिए कहा.

पर जब इस उपाय का असर नहीं हुआ तो एक महीना आयुर्वेदिक ट्रीटमैंट चलाया. डाक्टर ने राजीव को अश्वगंधा और जिनसैंग की औषधि दी. पर जब किसी भी डाक्टरी इलाज से काम नहीं बना, तो मां के बताए हुए उपाय देशी नुसखे को अपनाया गया.

ममता ने मुलहठी, देवदारू और सिरस के बीज को बराबर मात्रा में ले कर काली गाय के दूध के साथ पीस लिया और इस मिश्रण का 5 दिन तक सेवन किया और 5 दिनों के बाद पति के साथ मिलन किया.

मिलन के समय कूल्हे के नीचे तकिया लगा लिया, ताकि ज्यादा से ज्यादा शुक्राणु गर्भाशय तक पहुंच सकें. कामसूत्र से पढ़ कर कई तरह के आसन आजमाए, पर इन सारे उपाय से भी कोई फर्क नहीं पड़ा.

पति की पगार समय पर आए या न आए, ममता की माहवारी ठीक 28वें दिन आ जाती थी. पतिपत्नी एकदूसरे को बेहद प्यार करते थे और एकदूसरे की कमी बताते नहीं थे. असलियत यह थी कि ममता के पति राजीव की सैक्स में दिलचस्पी नहीं थी.

ममता पति को रिझाने की पूरी कोशिश करती थी. सहेलियों की सीख के मुताबिक ममता ने पति को बहुत मेहनत से कुकुर आसन में सैक्स करना सिखाया. सहेलियों ने बताया था कि इस आसन में वीर्य गर्भाशय के बेहद नजदीक पहुंच जाता है और शुक्राणुओं के अंडाणु से मिलने की उम्मीद बढ़ जाती है.

राजीव को इस खेल में मजा तो आता था, पर वह ममता को मां नहीं बना सका.

इस के बाद राजीव के दोस्तों के सुझाव के मुताबिक मिशनरी आसन किया गया. इस में राजीव ने ममता को बिस्तर पर सीधा लिटाने के बाद ऊपर से अपने अंग को प्रवेश कराया. तर्क यह था कि इस से अंग को योनि में गहराई तक प्रवेश करा सकेंगे, पर यह कोशिश भी बेकार गई.

इस के बाद टोटके का सहारा लिया गया. मंगलवार के दिन पतिपत्नी ने कुम्हार के घर जा कर पुत्र प्राप्ति के लिए प्रार्थना की और एक डोरी, जिस से वह मिट्टी के बरतन बनाता है, मांग लाए.

घर आने के बाद एक गिलास में पानी भर कर वह डोरी उस में डाल दी.

एक हफ्ते तक वह डोरी उस पानी में भिगो कर रखी. अगले मंगलवार को गिलास में से डोरी निकाल कर पतिपत्नी ने वह पानी पी लिया और इस के बाद वह डोरी हनुमान मंदिर जा कर समर्पित कर दी.

उस रात उन्होंने बहुत देर तक सैक्स किया. ममता पसीने से लथपथ थी और राजीव किसी घोड़े की तरह हांफ रहा था. उस रात उन्हें जिंदगी में पहली बार इतना मजा आया था.

ममता बहुत देर तक उसी तरह बिना कपड़ों के बिस्तर पर पड़ी रही, क्योंकि वह कोई जोखिम लेना नहीं चाहती थी. शुक्राणुओं और अंडाणुओं को मिलने में कोई परेशानी न हो, इस बात का पूरा खयाल रखा गया.

28वें दिन जब ममता को पीरियड नहीं आया, तो राजीव दौड़ कर प्रैग्नैंसी टैस्ट किट ले आया. पर यह कोशिश भी नाकाम रही.

29वें दिन खाना बनाते समय ममता को पीरियड हो गया. उसे पैड लगाने का

भी समय नहीं मिला और सूती साड़ी पर निशान आ गया.

राजीव की बहन ने एक टोटके को आजमाया. अपने बच्चे का पहला टूटा हुआ दूध का दांत एक काले कपड़े में बांध कर काले धागे की मदद से भाभी की कमर पर बांध दिया. जब तक वे पेट से न हो जाए, इस धागे को किसी भी कीमत पर न उतारने की कठोर हिदायत दी गई.

दूध के दांत को कमर पर बांधे हुए भी 3 महीने का समय हो चुका था. सैक्स के लिए चूहा आसन से हाथी आसन तक सैकड़ों आसनों को आजमाया जा चुका था और अभी भी ममता की कोख सूनी थी.

राजीव भी अब ममता को ही बच्चा न होने के लिए कुसूरवार मानने लगा था. ससुराल पक्ष की मौसी, नानी, बूआ, ताई सभी ममता को ताने देने लगे थे. ममता के पास खुदकुशी करने के अलावा कोई रास्ता नहीं बचा था. मरने की सोचना आसान है, पर मरना आसान नहीं.

कहते हैं कि मुसीबतें इनसान को बहुत ही शातिर और धोखेबाज बना देती हैं. ममता का देवर मैथिली 2 साल इलाहाबाद में कोचिंग के बाद राजीव और ममता के साथ रहने आया था. शहर में उस के सरकारी नौकरियों के एग्जाम थे. इस हफ्ते दारोगा, अगले महीने रेलवे, उस के बाद पीसीएस, फिर पीजीटी.

ममता को मैथिली के आने से बहुत राहत हो गई. राजीव और उस की मां को अब ममता पर चिल्लाने का मौका नहीं मिलता था.

देवर और भाभी की खूब बनती थी. ऐसा लगता था, जैसे दोनों जन्मजन्मांतर के दोस्त थे. मैथिली के हर काम का समय तय था. 4 बजे जागना, योगासन, कसरत, बादाम का दूध, 4 किलोमीटर की दौड़, फिर दोपहर में घंटों तक सोना और रात 12 बजे तक पढ़ाई. भाभी असिस्टैंट की तरह खड़ी रहती और देवर की हर फरमाइश को मुंह से निकलने से पहले पूरा कर देती.

भैया के घर आने के बाद उन की मोटरसाइकिल से दोनों खरीदारी के बहाने निकल जाते थे. ममता को शादी के 2 साल बाद पता चल रहा था कि वह किस गली और किस महल्ले में रह रही थी, शहर में कौनकौन सी घूमने की जगह थी. शहर में आइसक्रीम की दुकान कहां है और शहर में कितने पार्क हैं.

प्रेम को पनपने के लिए इतनी जगह बहुत है. दोपहर को मैथिली के उठने का समय हो गया था. ममता उस के लिए चाय बना लाई, लेकिन उठाया नहीं बल्कि उस के हाथपैरों को सहलाने लगी, उस के बालों में उंगलियां फिराने लगी.

मैथिली ने एक झटके में ममता को खींच कर सीने से सटा लिया और फिर वे एकदूसरे में खो गए.

अगले दिन भाभी और देवर नजर नहीं मिला पा रहे थे, पर उन के बरताव से साफ समझ आ रहा था कि दोनों बहुत खुश थे.

मैथिली ने रसोईघर में जा कर भाभी की कमर में पीछे से हाथ डाला और कूल्हों को सहलाया तो ममता ने गुस्से में उस की पीठ पर हलके से चिमटे से मार दिया. उसे लिमिट में रहने की हिदायत दी और जब मैथिली बुरा मान गया तो तुरंत ही ममता ने कान पकड़ कर माफी मांग ली.

ममता का खुराफाती दिमाग पूरी कुशलता से काम कर रहा था. उस रात ममता ने राजीव को बताया कि इन दिनों वह शिवलिंगी बीज एक भाग और पुत्रजीवक बीज 2 भाग को मिश्री के साथ खा रही है. ननद का दिया टोटका बंधा ही है, तो आज अच्छी उम्मीद है. फिर रात में देर तक उस ने राजीव के साथ भी संबंध बनाया.

यह कई दिनों तक चलता रहा. दोपहर में मैथिली और रात में राजीव के साथ प्यार. माहवारी आने के 5 दिन पहले उस ने दोनों से दूरी बना ली. इस बार उन की कोशिश रंग लाई.

शाम को ममता ने राजीव की पसंदीदा कौफी और पकोड़े बनाए और उसे यह खुशखबरी सुनाते हुए उस की गोद में बैठ गई, तो राजीव ने उसे ढेर सारा प्यार किया.

मैथिली, जो अपने एग्जाम दे कर वापस इलाहाबाद चला गया था, ममता ने प्रैग्नैंसी के आखिरी दिनों में वापस बुला लिया. अब दिनभर बेरोकटोक मैथिली अपनी प्यारी भाभी के साथ रह सकता था और एग्जाम की तैयारी भी कर सकता था.

ठीक ममता के डिलीवरी के दिन मैथिली का पीसीएस का रिजल्ट आ गया. मैथली को सरकारी नौकरी मिल गई. ममता के बच्चे की आंखें ममता से मिलती थीं. कान, नाक, ठुड्डी ससुराल के किसी न किसी सदस्य से मिलते थे.

मैथिली के लिए एक से एक अमीर घरों के रिश्ते आ रहे थे, बहुत सारा दहेज भी मिल रहा था, लेकिन मैथिली ने लड़की देखने से साफ मना कर दिया. ममता ने मैथिली को अपनी बहन शिखा से शादी के लिए मना लिया.

मैथिली को भी इसी शहर में नौकरी मिल गई है. दोनों परिवार एकसाथ बहुत प्यार से रहते हैं. ममता दोबारा मां बनने वाली है और इस महीने शिखा की माहवारी भी नहीं हुई है. ●

आयुर्वेद से आयुष्यमान

रतन्स आयुर्वेदिक समाधान

प्र. मेरे पुत्र की उम्र १८ वर्ष है, उसकी शरीर प्रकृति कमज़ोर है, उसके लिए आयुर्वेदिक उपचार सुझाएं। -अविनाश, अहमदाबाद.

उ. शरीर प्रकृति की सुदृढ़ता के लिए आप उन्हें आयुर्वेदिक तत्वों से युक्त ***'वेटलिफ्टर'*** मॉल्ट १-१ चम्मच सुबह-शाम एक गिलास दूध के साथ नियमित ३ माह सेवन करवा सकते हैं।

प्र. मैं बेडवेटिंग की समस्या के लिए उपचार जानना चाहता हूं। -एक पाठक, जयपुर.

उ. समस्या हेतु आयुर्वेदिक तत्वों से युक्त ***'बेडवेट'*** सिरप २-२ चम्मच दिन में दो बार नियमित सेवन कर सकते हैं। साथ ही रोगी का आत्मविश्वास बढ़ाना भी आवश्यक है।

प्र. मैं बोलते समय हकलाती हूं, इस वज़ह से हीन-भावना से ग्रस्त हो गई हूं। कृपया प्रभावी उपचार लिखें। -एक पाठिका, मऊ.

उ. समस्या के लिए आप ***'वॉईस'*** सिरप २-२ चम्मच दिन में दो बार पानी के साथ नियमित ३ माह तक सेवन कर सकते हैं। साथ ही अपना आत्मविश्वास बढ़ने हेतु आईने के सामने खड़े होकर खुद से ही बातें करें।

प्र. मेरी बॉडी-ग्रोथ एवरेज ही है। समस्या के लिए उपाय बताएं। -एल. आश्विन, चेन्नई.

उ. वैसे देखें तो बॉडी-ग्रोथ जैनेटिक होती है। फिर भी आप चाहें तो पाचन क्रिया ठीक कर ग्रंथियों को सक्रिय करने हेतु ***'हाईटॉप'*** सिरप २-२ चम्मच रोज़ सुबह-शाम नियमित सेवन कर सकते हैं। पौष्टिक आहार लें, रस्सी कूद, तैराकी अथवा योगासन अवश्य करें।

प्र. मैं ४१ वर्षीय हूं, पिछले कुछ समय से मेरा हाज़मा खराब होता जा रहा है, भोजन के बाद पेट भारी लगता है। आयुर्वेदिक उपाय बताएं। -अमरसिंह, मऊ.

उ. गरिष्ठ भोजन का सेवन हमारे पाचन-तंत्र में गड़बड़ी पैदा करता है। अपनी समस्या हेतु आप ***'पचालो'*** सिरप २-२ चम्मच सुबह-शाम भोजन के पश्चात् पानी के साथ सेवन कर सकते हैं। हल्का भोजन लें।

प्र. मुझे शरीर में फुलापन महसूस हो रहा है, कई बार इस वज़ह से लोगों के कमेन्ट्स भी सुनना पड़ते हैं। -सुनीता, हरदोई.

उ. समस्या के लिए आप आयुर्वेदिक औषधि तत्वों से युक्त ***'ओबेरिड'*** कैप्सूल २-२ सुबह-शाम तीन माह तक नियमित रूप से सेवन कर सकते हैं। योगा या व्यायाम करें एवं पानी बहुत ज्यादा पीएं।

प्र. मेरी उम्र २८ वर्ष है, मेरे चेहरे की त्वचा में चमक नहीं है, त्वचा में निखार लाने का उपाय बताएं। -आर. गुप्ता, भोपाल.

उ. आप रोज़ाना कच्चे दूध में एक कपास का फोहा भिगोकर उससे चेहरा साफ करें। इसके साथ ही हर्बल तत्वों से युक्त हर्बल ***'सुगंधा वर्णनिखार क्रीम'*** दिन में दो बार नियमित रूप से चेहरे पर लगा सकते हैं।

प्र. शरीर में उचित आकर्षण नहीं होने से मैं बहुत परेशान हूं, क्या करूं? उचित उपाय बताएं। -एक पाठिका, बेंगलुरू.

उ. उपरोक्त समस्या के लिए आप ***'सुडोल'*** बॉडी टोनर जैल से दिन में दो बार मालिश कर सकते हैं एवं ***'सुडोल'*** बॉडी टोनर कैप्सूल्स दिन में तीन बार दूध के साथ तीन माह तक नियमित रूप से सेवन कर सकते हैं।

प्र. मेरे सिर के बाल बहुत झड़ते हैं, उनका झड़ना बंद होने का सुरक्षित उपाय बताएं। -बी.आर. पाटीदार, नई दिल्ली.

उ. आहार में विटामिन-'ई' युक्त पदार्थों जैसे-अंकुरित अनाज, दाल, केला आदि का समावेश करें। साथ ही ***'केश वरदान'*** तेल से नियमित रूप से मालिश कर सकते हैं।

उपरोक्त सलाह रोगियों के लक्षणों को ध्यान में रखकर दी गई है. दवाओं का प्रयोग वैद्यकीय मार्गदर्शन में करें.

ratan ayurvedic
Ratan's
सुडोल
बॉडी टोनर जैल
आयुर्वेदिक औषधि
Ratan's Sudol Body Toner Gel
HELPLINE
95166-16688
प्रमुख आयुर्वेदिक व मेडिकल स्टोर्स पर उपलब्ध.
Buy online: www.ratanayurvedic.com

अब्दुल गफ्फार

औलाद

नरगिस की खूबसूरती के चर्चे आम होने लगे. गांवभर की औरतें नरगिस की मां से कहने लगीं कि उस की शादी की फिक्र करो जुबैदा. उम्र भले ही कम सही, लेकिन कुदरत ने इस को खूबसूरती ऐसी दी है कि बड़ेबड़ों का ईमान डोल जाए.

इस पर जुबैदा बोली, "तुम लोग मेरी बेटी की फिक्र में मत मरा करो. मेरे पास दौलत भले ही नहीं है, लेकिन बेटी ऐसी मिली है कि राजेमहाराजे तक आएंगे रिश्ता ले कर मेरे दरवाजे पर."

एक दिन ऐसा हुआ भी. हवेली से बड़े नवाब के बड़े साहबजादे शाहरुख मिर्जा के लिए नरगिस का रिश्ता आ गया. जुबैदा की खुशी का ठिकाना न रहा.

नरगिस के अब्बा अब इस दुनिया में नहीं थे, इसलिए मंगनी की रस्म भी जुबैदा ने खुद पूरी की और अगले साल बेटी के निकाह का दिन तय कर दिया.

इस बीच बचपन का बिछड़ा जुबैदा का भांजा यानी नरगिस के मामा का बेटा खुर्रम पाकिस्तान से लौट आया. लोग कहते हैं कि वह बकरी चरातेचराते सरहद पार कर गया था और फिर वहां से लौट कर नहीं आया.

खुर्रम के साथ गांवभर में खुशियां भी लौट आईं, इसलिए कि बचपन में खुर्रम गांवभर का चहेता हुआ करता था. जुबैदा के भाईभाभी खुर्रम के साथ जुबैदा के घर मिलने आए और जुबैदा को उस का वादा याद दिलाया.

जुबैदा की जबान से आवाज नहीं निकल रही थी, "भाभी... वह... मैं ने तो... नरगिस का रिश्ता हवेली में शाहरुख मिर्जा के साथ तय कर दिया है. मैं नहीं जानती थी कि खुर्रम कभी लौट कर भी आएगा."

यह सुन कर जुबैदा के भाईभाभी के अलावा खुर्रम भी हैरान रह गया. बच्चों के बचपन में किए गए उन के मांबाप के वादे को जुबैदा द्वारा तोड़े जाने का उन्हें बेहद अफसोस हो रहा था, लेकिन गलती जुबैदा की नहीं, बल्कि हालात की थी, इसलिए उन्हें खामोश रह जाना पड़ा.

हालांकि खुर्रम के दिल में गांठ बैठ गई. उस ने नरगिस को अपने दिल से कभी नहीं निकालने का फैसला कर लिया.

दोनों खानदान एक ही गांव में रहते थे, इसलिए नरगिस और खुर्रम का एकदूसरे के यहां आनाजाना लगा रहता था. एक दिन मौका पा कर खुर्रम ने नरगिस को घेर लिया, "देखो नरगिस, मैं जानता हूं कि तुम्हारा निकाह हवेली में तय हो चुका है, लेकिन मैं तुम्हें अपने दिल में बसा चुका हूं, इसलिए वहां से निकाल नहीं सकता."

नरगिस बोली, "तुम तो पाकिस्तान चले गए थे, फिर मैं कब दिल में बस गई?"

"मैं तुम्हें भूला ही कब था. बचपन में जब हमारा रिश्ता तय हुआ था, तब मैं होशमंद था और तुम नादान. उस वक्त मैं 8 साल का और तुम 5 साल की थी."

नरगिस बोली, "अच्छा तो अब मैं क्या कर सकती हूं?"

खुर्रम ने कहा, "तुम चाहो तो अब भी लौट सकती हो..."

नरगिस ने कहा, "बेवा मां के अरमानों को तोड़ने की हिम्मत नहीं है मुझ में. उन्होंने मां की ममता के साथ बाप जैसी परवरिश भी दी है. पुराने लोग अपनीजबान पर मरते हैं. अम्मी हवेली वालों को जबान दे चुकी हैं."

"फुफू तो मेरी अम्मी को भी जबान दे चुकी थीं..." खुर्रम बोला.

"लेकिन, तब तुम गायब थे और गायब इनसान के भरोसे कोई अपनी बेटी को घर बिठा कर नहीं रख सकता," नरगिस बोली.

बहरहाल, बात आईगई हो गई. फिर तय वक्त पर नरगिस की बरात आई और अगली सुबह वह रुखसत भी हो गई.

हवेली में दुलहन की खूबसूरती एक कौंधती हुई बिजली की मानिंद झमाका बन कर गिरी. रात हुई. दूल्हा आया, लेकिन पलंग के बजाय सोफे पर सो गया. नरगिस घंटों इंतजार करती रही, लेकिन वह सेज तक नहीं आया.

सुबह जल्दी ही नरगिस जाग गई. हड़बड़ा कर कपड़े समेटे और पलंग से नीचे उतर आई और सोफे के पास गई, जहां उस का शौहर सो रहा था.

शाहरुख का चेहरा देखते ही नरगिस गश खा कर वहीं गिर पड़ी. जब वह गिरी तब उस की आवाज पर शाहरुख जाग गया. अपनी दुलहन को ऐसे देख कर वह समझ गया कि उस की बदसूरती ने नरगिस को बेहोश कर दिया है.

फिर शाहरुख बाहर जा कर अपनी मां की गोद में सिर रख कर रोने लगा, "अम्मी, मैं न कहता था कि मेरी शादी किसी खूबसूरत लड़की से मत करना. देखो, मुझे देखते ही दुलहन गश खा कर गिर पड़ी है."

मां दौड़ीदौड़ी दुलहन के कमरे में गई. पानी की छींटें मार कर उसे होश में लाया गया, फिर दुलहन के सामने अपना दामन फैलाते हुए अम्मी ने कहा, "बेटी, मैं तुम्हारी असल गुनाहगार हूं. शाहरुख अपनी सूरत को ले कर बचपन से ही परेशान रहा है. मैं ने ही उस से बारबार चांद सी दुलहन लाने का वादा किया था.

"बेटी, अब तुम इस हवेली की बड़ी बहू हो. मेरे इन आंसुओं का वास्ता... तुम मेरे शाहरुख को अपना लो, नहीं तो वह जीतेजी मर जाएगा."

बहरहाल, नरगिस को हालात से

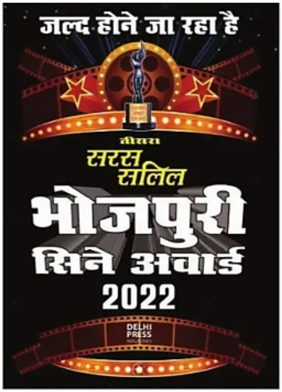

समझौता करना पड़ा. जैसा अकसर लड़कियों को करना पड़ता है. फिर शाहरुख की खुरदरी जिंदगी में बहार आ गई. शाहरुख की खुशी देख कर उस की मां आयशा फूली नहीं समाती. वह हवेली की औरतों में अपनी बहू की खूबसूरती के चर्चे बढ़ाचढ़ा कर करती.

देखतेदेखते एक साल, फिर 2 साल बीत गए, लेकिन नरगिस मां नहीं बनी. उस की सास आयशा को शक होने लगा कि कहीं ऐसा तो नहीं कि नरगिस अपने शौहर के साथ हमबिस्तर ही नहीं होती. पर उन दोनों ने अपने हमबिस्तर होने का उसे यकीन दिलाया, फिर वह अपने वारिस को ले कर फिक्रमंद रहने लगी.

3 साल बीत गए, फिर डाक्टरों के यहां चक्कर लगने शुरू हो गए. डाक्टरों ने बताया कि नरगिस के अंदर कोई खराबी नहीं है. जो कमी है, वह शाहरुख के अंदर ही है.

शाहरुख हवेली में सब से बड़ा लड़का था. उस के अंदर का खोट आयशा को अपना खोट महसूस होने लगा. उस की बहू को मारे जाने वाले ताने उस के जिगर पर नश्तर बन कर चुभने लगे. फिर पोतेपोतियों की चाहत में आयशा बीमार रहने लगी.

एक दिन आयशा ने नरगिस से अकेले में कहा, "दुलहन, एक औरत के लिए सब से बड़ा कलंक होता है उस का मां नहीं बनना. मैं जानती हूं कि मेरे बेटे में खोट है, लेकिन दुनिया तुम्हें ही हिकारत की नजर से देखेगी, बांझ कहेगी.

"मैं चाहती हूं कि तुम अपने मायके में कुछ दिनों तक रह लो. क्या पता, वहीं कुदरत तुम्हारी गोद हरी कर दे और हमारे खानदान का चिराग रोशन हो जाए."

नरगिस नादान और कमउम्र थी. उस ने हंसते हुए कहा, "अम्मां, मैं वहां अकेली रहूंगी, तो मेरी गोद हरी कैसे होगी?"

आयशा ने समझाया, "यह हंसने का समय नहीं, बल्कि सोचने का समय है. एक औरत दूसरी औरत का और एक मां दूसरी मां का दर्द समझती है. तुम वहां जा कर सोचना कि इस हवेली का चिराग कैसे रोशन होगा. औरत अपने अंदर बड़े से बड़ा तूफान भी जज्ब कर लेती है, यह बात तुम्हें समझनी पड़ेगी."

नरगिस अपने घर चली आई. आते ही मां ने औलाद की खुशखबरी जाननी चाही, लेकिन उसे नाउम्मीदी हाथ लगी. फिर नरगिस ने अपनी सास की कही बातों को मां से कहा. जुबैदा सब समझ गई.

जुबैदा ने बेटी को समझाया, ''बीज गलत रहने से जमीन बंजर रह जाती है और सारा कुसूर जमीन के माथे मढ़ दिया जाता है, इसलिए बीज बदला जाता है. जब जानदार और दमदार बीज धरती की कोख में पड़ता है, तो धरती को फाड़ कर बाहर निकल आता है. थोड़ा दर्द सहने के बाद जब धरती पर फसल लहलहाने लगती है, तब धरती अपने सारे दर्द भूल जाती है."

फिर जुबैदा को खुर्रम याद आया, जो अभी भी कुंआरा बैठा था. अपने खानदान का देखाभाला लड़का था. उस ने उस तक खबर पहुंचा दी कि नरगिस आई हुई है.

खुर्रम दौड़ादौड़ा वहां आ पहुंचा. दोनों को अकेला छोड़ कर जुबैदा अपना इलाज कराने शहर चली गई. नरगिस ने खुर्रम से काफी देर तक आपस में बातें की.

उस दिन के बाद जब तक नरगिस मां के घर रही, खुर्रम का आनाजाना लगा रहा. जबजब खुर्रम आता, जुबैदा कभी अपना इलाज कराने शहर चली जाती तो कभी बाजार चली जाती, ताकि तनहाई में उम्मीदों के चिराग जल सकें.

2 महीने बीत गए. नरगिस ज्यादा दिनों तक यहां रह भी नहीं सकती थी. एक दिन जुबैदा ने उसे टटोला. नरगिस ने जवाब दिया, "अम्मां, पागल हो गई हो क्या... बिना मर्द के बच्चा कैसे होगा?"

जुबैदा ने पूछा, "खुर्रम मर्द नहीं है क्या?"

नरगिस को पहली बार मां और सास दोनों की बातें समझ में आई. वह फूटफूट कर रोने लगी, "यह क्या कह रही हो आप... ऐसा कैसे हो सकता है..."

जुबैदा ने कहा, "ऐसा करने के लिए मैं कह रही हूं और तुम्हारी सास कह रही हैं. सारा गुनाह हमारे सिर होगा. मेरी बेटी को लोग बांझ कहें, यह मैं कतई बरदाश्त नहीं कर सकती."

नरगिस बोली, "लेकिन, मैं आप लोगों के लिए खुर्रम को कुरबानी का बकरा नहीं बना सकती."

जुबैदा ने कहा, "मर्द औरत के जिस्म प्यासा होता है. मर्द खुद को गिराने की ताक में लगा रहता है. खुर्रम के लिए यह कुरबानी नहीं, बल्कि फख्र की बात होगी."

नरगिस ने कहा, "मेरे गुनाहों की सजा आप को या मेरी सास को नहीं मिल सकती..."

जुबैदा चिल्लाई, "फिर तो जाओ हवेली में और अपने गुनाहों की सजा जिंदगीभर भुगतती रहो," कह कर जुबैदा बाहर निकल गई और नरगिस किसी कमजोर दीवार की तरह वहीं ढह गई.

अगली सुबह नरगिस ने हवेली का रुख किया. सास ने उम्मीदों के साथ उस का स्वागत किया. शाम होते ही आयशा ने उम्मीद से होने की बात पूछी, पर नरगिस ने इनकार कर दिया.

आयशा ने कहा, "तुम्हारी तरह तुम्हारी मां भी बेवकूफ ठहरी. क्या उस ने तुम्हें दुनियादारी नहीं सिखाई..."

नरगिस ने कहा, "सिखाई थी, बल्कि आप से ज्यादा बेहतर ढंग से सिखाई थी, लेकिन मैं ने मोहरा बनने से साफ इनकार कर दिया."

आयशा मुंह बना कर रह गई.

रात में नरगिस ने अपने शौहर को सारी बातों से आगाह किया. नरगिस की बातें सुन कर शाहरुख हैरान रह गया. उस ने अपनी मां और सास को बुराभला कहना शुरू किया, लेकिन नरगिस ने उसे समझाया कि एक को अपने बेटे की कमी पर परदा डालना है, तो दूसरी को अपनी बेटी की कमी पर परदा डालना है.

फिर नरगिस ने शाहरुख को एक प्लान समझाते हुए कहा कि शायद इस तरह हमारे लिए कोई राह निकल आए.

सुबह होते ही शाहरुख ने अपनी मां से कहा कि फलां डाक्टर का पता चला

जवानी तेरी

तेरी जवानी देख कर जमाना भूल गए
जन्नत की हूर का हर फसाना भूल गए.

खुली जुल्फें तेरी जरा लहरा क्या गईं
लोग अपनी पलकें झपकाना भूल गए.

अपने होंठ तू ने मेरे होंठों से लगा दिए
हम तो मैखाने में जाम उठाना भूल गए.

सीने से एक बार सरका तेरा आंचल
आईने तो खुद पे इतराना भूल गए.

तू तोहफा है ऐसा एक कुदरत का
तेरे सामने हम नजराना भूल गए.

तेरी सांसों में है गुनगुनाहट सी
लोग गजल गुनगुनाना भूल गए.

हुस्न की नदी में ऐसे डूब गए हम
दरिया ए जिंदगी में किनारा भूल गए.

तेरी मोहब्बत अब भी याद है सब को
गुजरा हुआ हर एक जमाना भूल गए.

छूते ही तुझे सांसें थम सी गईं
अपने दिल को धड़काना भूल गए.

–नीरज कुमार मिश्रा

है, जो बेऔलाद लोगों के लिए मसीहा साबित हो रहा है.

आयशा ने उन्हें उस डाक्टर के पास जाने के लिए कहा. वे दोनों डाक्टर के पास गए. जब वापस लौटे तो औलाद की भूखी आयशा दरवाजे पर नजरें गड़ाए बैठी थी. आते ही फौरन सवाल किया, "क्या कहा डाक्टर ने?"

वे दोनों अपने प्लान के मुताबिक मुंह लटकाए अपने कमरे में चले गए. मां का मन नहीं माना और वह भी पीछेपीछे उन के कमरे में गई, "क्या कहा डाक्टर ने?"

शाहरुख ने कहा, "आप नरगिस से ही पूछ लो."

यह सुन कर आयशा बोली, "क्या ड्रामा है. आखिर कोई कुछ बता क्यों नहीं रहा है?"

नरगिस ने बताया, "डाक्टर का कहना है कि शौहरबीवी दोनों को एक साल कश्मीर घाटी में गुजारना पड़ेगा. वहां की बर्फीली आबोहवा और कुदरती खानपान में एक साल गुजारने के बाद शाहरुख की अंदरूनी कमी दूर होने की पूरी उम्मीद है. अगर कश्मीर घाटी में पेट ठहरता है तो बच्चा दूध का धुला पैदा होगा."

आयशा ने पूछा, "तो फिर दिक्कत क्या है?"

शाहरुख बोला, "एक साल तक वहां रहना कैसे मुमकिन होगा? वहां सर्दी भी जबरदस्त पड़ती है."

आयशा ने कहा, "जिस आबोहवा में इनसान रहने लगता है, आहिस्ताआहिस्ता उस का आदी हो जाता है. तुम लोग बस जाने की तैयारी करो. मैं और कुछ सुनना नहीं चाहती."

यह कहते हुए आयशा उन के कमरे से बाहर निकल गई. उस के जाते ही दोनों शौहरबीवी खुशी से झूम उठे, इसलिए कि उन के प्लान का पहला हिस्सा आसानी से मुकम्मल हो चुका था.

ठीक 8 महीने बाद उन के प्लान का दूसरा हिस्सा शुरू हुआ. अफजल एक गरीब कश्मीरी था. वह रोज ताजा फल शाहरुख के डेरे पर ला कर पहुंचा जाता था.

अफजल की बीवी कुलसूम दुबलीपतली, बला की खूबसूरत कश्मीरी औरत थी. पूरे कश्मीर का हुस्न उस के बदन में समाया हुआ लगता था. अफजल की गैरमौजूदगी में कभीकभी कुलसूम भी फल पहुंचाया करती थी.

एक दिन कुलसूम का निकला हुआ पेट देख कर नरगिस की उम्मीदों को पर लग गए. उस ने पूछा, "बहन, कितने महीने हो गए?"

कुलसूम ने बताया, "8 महीने हो गए बीबीजी."

नरगिस ने पूछा, "पहले से आप के कितने बच्चे हैं?"

कुलसूम शरमाते हुए बोली, "10 बच्चे हैं जी. पर आप ऐसा क्यों पूछ रही हैं?"

नरगिस ने अपनी पूरी कहानी कुलसूम को सुना दी. कहानी सुनातेसुनाते दोनों के दामन आंसुओं से भीग गए.

कुलसूम ने घर जा कर अपने शौहर अफजल से पूरी बात बताई और कहा कि क्यों न हम अपनी आने वाली औलाद उसे दे दें. वह लेने की ख्वाहिशमंद है.

कुलसूम की बातें सुन कर अफजल हैरान रह गया. उस ने कहा, "तुम कैसी मां हो, जो अपना बच्चा दूसरी औरत को देने के लिए तैयार हो."

कुलसूम बोली, "मां होने का सुख एक औरत के मुकम्मल होने का सुबूत होता है. मुझे मां होने का भरपूर सुख मिला है. क्यों न जो इस सुख से महरूम है, उसे अपनी तरफ से औलाद की दौलत दे कर उसे भी मालामाल कर दिया जाए."

अफजल अपनी बीवी की बातें सुन कर सोचने के लिए मजबूर हो गया और बोला, "ठीक है, जैसी तुम्हारी मरजी."

फिर अगले महीने कुलसूम को एक नहीं, बल्कि जुड़वां बेटे हुए. उस ने एक बेटा नरगिस को दे कर उस की गोद हरी कर दी. बदले में नरगिस ने अपने गले में पड़ा हीरे का हार कुलसूम को देना चाहा, लेकिन उस ने लेने से साफ इनकार कर दिया.

फिर साल पूरा होते ही शाहरुख और नरगिस अपनी औलाद के साथ हवेली लौट आए. आयशा के तो पैर ही जमीन पर नहीं पड़ रहे थे.

शानदार दावत दी गई. नरगिस के मायके से भी लोग आए थे. मेहमानों की भीड़ से अलग शाहरुख और नरगिस एकदूसरे को एहसानमंद नजरों से देख रहे थे. उन की चतुराई से हवेली को वारिस और नरगिस को औलाद मिल गई थी. ●

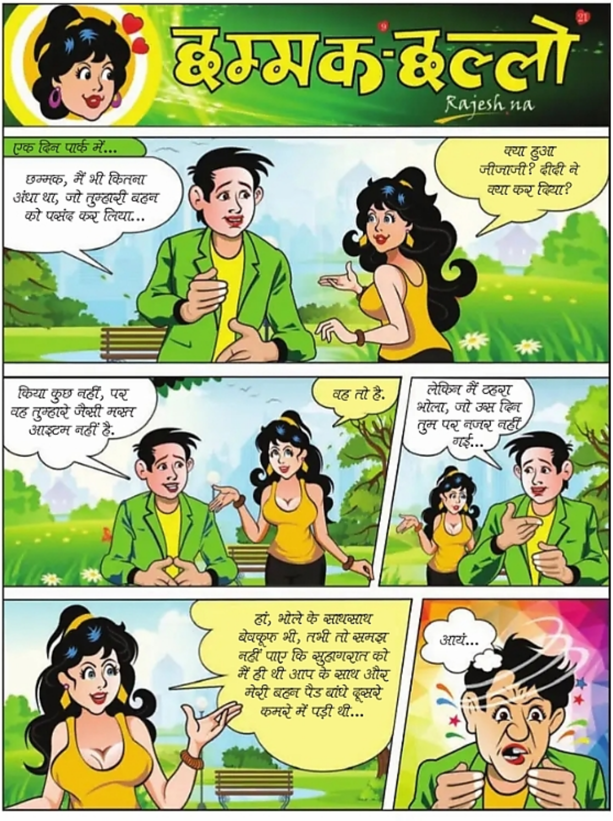
छम्मक-छल्लो
Rajesh na
एक दिन पार्क में...
छम्मक, मैं भी कितना अंधा था, जो तुम्हारी बहन को पसंद कर लिया...
क्या हुआ जीजाजी? दीदी ने क्या कर दिया?
किया कुछ नहीं, पर वह तुम्हारे जैसी मस्त आइटम नहीं है.
वह तो है.
लेकिन मैं ठहरा भोला, जो उस दिन तुम पर नजर नहीं गई...
हां, भोले के साथसाथ बेवकूफ भी, तभी तो समझ नहीं पाए कि सुहागरात को मैं ही थी आप के साथ और मेरी बहन पैड बांधे दूसरे कमरे में पड़ी थी...
आयं...

मजबूरी

फारूख हुसैन

समीर एक कोने में चुपचाप बैठा हुआ था. उस की आंखों के आंसू बह कर सूख चुके थे. कुछ ही दूरी पर पड़ोसियों ने सर्दी के सितम को देख कर आग जलाने के लिए लकड़ियों का इंतजाम कर के आग जला दी थी.

सामने ही एक टूटी खाट पर समीर की बेटी शाहीन की लाश पड़ी हुई थी, जिस के शरीर पर लिबास के नाम पर जगहजगह से फटापुराना एक सूट ही था.

समीर के पास ही बैठी उस की बीवी रजिया का रोना उस के कलेजे में तीर की तरह चुभ रहा था. घर में पासपड़ोस वालों की भीड़ बढ़ने लगी थी और औरतें लगातार रजिया को दिलासा दे रही थीं.

सुबह सूरज की किरणें धूप के रूप में समीर के आंगन में उतर चुकी थीं और शाहीन की मुरदा देह को न जाने कैसी तपिश देने की कोशिश कर रही थीं.

धूप से सर्दी का सितम थोड़ा सा कम हो गया था, पर यह सब हुआ समीर की बेटी शाहीन के जाने के बाद. अगर उस के पास भी पहननेओढ़ने के लिए कुछ होता, तो शायद शाहीन जिंदा होती.

समीर ने लाख कोशिश की कि कहीं से पैसों का इंतजाम कर गरम कपड़े खरीद ले, लेकिन कुछ भी मुमकिन न हो सका. उस की झोंपड़ी भी ऐसी न थी कि ठंड से बचाव हो सके.

समीर अब उस दिन को कोस रहा था, जब उस ने एक मासूम बच्चे की जान बचाने का फर्ज निभाया था. कितना खुश था वह अपनी बीवी रजिया और बेटी शाहीन के साथ.

समीर एक ईंटभट्ठे पर मजदूरी करता था. हर रोज उसे मजदूरी में ज्यादा रुपए तो नहीं मिल पाते थे, लेकिन फिर भी वह अपना और अपने परिवार का भरणपोषण किसी तरह सुकून से कर लेता था.

समीर के मजदूर साथी हमेशा यही कहते थे कि समीर जितना भी परेशान रहता हो, पर हमेशा हंसता ही रहता है, पर उस की खुशियों भरी जिंदगी में ऐसा बवाल मचा कि उस के चेहरे से हंसी हमेशा के लिए गायब हो गई.

समीर उस दिन भी हमेशा की तरह मजदूरी करने ईंटभट्ठे पर जा रहा था कि तभी उस ने देखा, सामने की कालोनी से निकल कर एक बच्चा अपनी छोटी सी साइकिल चलाता हुआ सड़क पर आ गया था. शायद उस बच्चे की देखभाल करने वाली आया उसे छोड़ कर अंदर चली गई थी.

तभी तेज बजते हौर्न से समीर का ध्यान सड़क की तरफ गया. एक ट्रक तेजी से उस बच्चे की ओर आ रहा था. समीर समझ गया कि उस बच्चे को बचाने के लिए शोर मचाना फुजूल है और वह उसे बचाने के लिए दौड़ पड़ा.

जैसे ही समीर बच्चे के करीब पहुंचा और उसे उठा कर दौड़ा कि तभी उसे ट्रक की एक जोरदार टक्कर लगी और उस के हाथ से बच्चा उछल कर दूर जा गिरा.

समीर चीख पड़ा. उसे कुछ शोर सुनाई दिया और उस के बाद वह बेहोश हो गया.

जब समीर को होश आया, तो उस के नथुनों में दवाओं की अजीब सी गंध भर गई. उस ने एक नजर कमरे के चारों ओर डाली और दीवार पर लगे खस्ताहाल कलैंडर से अंदाजा लगा लिया कि वह किसी सरकारी अस्पताल में है. तभी उस ने हिलने की कोशिश की, तो उस के शरीर में एक दर्द की लहर सी दौड़ गई. इस के बाद उसे बच्चे की याद आई.

कुछ ही पलों में कमरे में रजिया शाहीन को ले कर आ गई. रजिया के उलझे बाल और सूजी आंखें देख कर ऐसा लग रहा था कि वह कई रातों से सोई नहीं थी.

समीर को नहीं पता था कि वह कितने दिनों से अस्पताल में था और रजिया ने कैसे उस के इलाज के लिए पैसों का इंतजाम किया होगा. तभी उस के पैर में तेज दर्द उठा. उस ने पैर हिलाने की कोशिश की तो पाया कि उस का पैर था ही नहीं.

"मेरा पैर..." समीर के मुंह से बहुत ही मुश्किल से ये 2 शब्द निकले.

"ट्रक की टक्कर से आप का एक पैर कई जगह से फैक्चर हो गया था, जो किसी तरह से भी जुड़ने के हालात में नहीं था, लिहाजा हमें आप का पैर काट कर अलग करना पड़ा, वरना शरीर में जहर फैलने की वजह से आप की जान भी जा सकती थी," अंदर आते हुए एक डाक्टर ने बताया.

कुछ दिनों बाद ही समीर को अस्पताल से छुट्टी दे दी गई. घर के हालात बद से बदतर हो चुके थे. रजिया भी अब आसपड़ोस के घरों में चौकाबरतन करने लगी थी, जिस से जैसेतैसे गुजरबसर हो रही थी.

रजिया ने ही समीर को बताया कि ट्रक ड्राइवर ट्रक ले कर वहां से भाग गया था. उस बच्चे के मातापिता ने यह एहसान कर दिया था कि ऊंची पहुंच के चलते उसे उठा कर सरकारी अस्पताल में भरती करा दिया था, पर उस के बाद उन लोगों ने उस का हालचाल पूछने की भी जरूरत नहीं समझी और नातेरिश्तेदारों ने तो 2-4 दिन के बाद ही आना बंद कर दिया था कि कहीं कुछ देना न पड़ जाए.

समीर अब बैसाखियों के सहारे ही था. रजिया को देख कर उसे ऐसा लग रहा था, जैसे उस ने खुद अपने हाथों उस की खुशियों और जवानी दोनों पर ग्रहण लगा दिया था. 26 साल की उम्र में वह 46 साल की लगने लगी थी.

घर की हालत कुछ ज्यादा ही खराब हो चुकी थी. रजिया द्वारा कमाए गए रुपयों से जैसेतैसे दो वक्त का खाना ही मिल पा रहा था. इसी बीच समीर को घने अंधकार के बीच रोशनी की एक किरण चमकती दिखाई दी.

पता चला कि सरकार की ओर से जरूरतमंदों और गरीबों के लिए कई योजनाएं शुरू कर दी गई हैं, जिस के लिए वह सभासद, चेयरमैन से ले कर विधायक और सरकारी अफसरों की चौखट के चक्कर लगाता रहा, लेकिन हर जगह उसे बस आश्वासन ही दिया गया कि जल्द ही आप को सरकारी सुविधाएं दे दी जाएंगी, पर उसे कुछ नहीं मिल पाया, क्योंकि वह किसी भी जांच अधिकारी को अपनी बेबसी और मजबूरी के अलावा और कुछ न दे सका.

इस बार की सर्दी समीर की परेशानियों को बढ़ाने आई थी.

कड़ाके की सर्दी होने के बावजूद समीर के पास गरम कपड़े के नाम पर कुछ भी नहीं था. और तो और उस की बेटी शाहीन के लिए भी कुछ नहीं था. रजिया ने बहुत कोशिश की थी कि गरम कपड़ों का इंतजाम हो सके, लेकिन कुछ न हो सका.

सर्दी का कहर सितम पर था. घना कोहरा और चल रही शीतलहर समीर के परिवार पर पूरी तरह से कहर बरपा रही थी. इसी बीच शाहीन को सर्दी ने अपने आगोश में ले लिया.

रजिया जैसेतैसे पैसों का इंतजाम कर महल्ले के नीमहकीम डाक्टर से दवा ले कर शाहीन को खिला रही थी, लेकिन तबीयत में सुधार न होते देख उस डाक्टर ने भी हाथ खड़े कर दिए और शाहीन को किसी बड़े डाक्टर को दिखाने के लिए कहा.

समीर शाहीन के इलाज के लिए सरकारी अस्पताल भी गया, पर वहां भी सही इलाज न हो पाया, क्योंकि सरकारी डाक्टर बाहर की दवा ही लिख कर देते थे, जिन्हें खरीदने में वह पूरी तरह नाकाम था.

रजिया ने डाक्टर साहब से विनती भी की थी कि उस की बेटी को बाहर की दवा न लिख कर अंदर से ही दवा दे दी जाए, लेकिन डाक्टर ने उस की एक न सुनी.

समीर अपने बचपन के दोस्त शफीक से रुपए उधार लेने गया, लेकिन उस ने भी कामधंधा न चलने का बहाना बना कर उसे टाल दिया. वह बुझे मन से वापस चला आया. उस का मन कर रहा था कि इस से अच्छा तो वह उसी दिन मर गया होता, जब वह सड़क हादसा हुआ था.

आज जब समीर ने घर की चौखट पर कदम रखा, तभी रजिया की जोर से रोने की आवाज सुनाई दी. उस ने अंदर जा कर देखा कि शाहीन अपना इलाज होने का इंतजार करतेकरते हमेशा के लिए सो गई थी.

यह देख कर समीर वहीं जमीन पर बैठ गया. वह खुद को ही शाहीन का कातिल समझ रहा है. उस के पास तो शाहीन के कफनदफन के लिए भी पैसे नहीं थे.

"अरे, यह सब कैसे हो गया... हमें तो पता ही नहीं चला. एक बार कुछ बताया तो होता," तभी किसी की ऊंची आवाज सुन कर समीर की तंद्रा टूटी.

समीर ने देखा कि महल्ले का सभासद किसी बड़े नेता को अपने साथ लाया था. उस नेता के साथ उस के कुछ कार्यकर्ता भी थे, जो रजिया से पूछ रहे थे. दूसरी ओर कुछ लोग मोबाइल फोन से धड़ाधड़ उन के फोटो खींच रहे थे.

"ये लो 5,000 रुपए और बच्ची के कफनदफन का इंतजाम करो," उस नेता जैसे दिखने वाले आदमी ने पैसे समीर के हाथ में पकड़ा दिए.

'निकल जाओ यहां से... कोई जरूरत नहीं यह सब दिखावा करने की और ले जाओ अपने ये रुपए...' समीर का मन जोर से चीखने को कर रहा था, पर सामने पड़ी बेटी की लाश को देख कर उस की चीख न जाने कहां गुम हो गई थी. ●

नम्रता सरन 'सोना'

सागर से मुझ को मिलना नहीं है

गंगा गांव की एक भोलीभाली और बेहद खूबसूरत लड़की थी. उस की मासूम खूबसूरती को वैसे तो शब्दों में ढालना बहुत ही मुश्किल है, पर यह समझ लीजिए कि गंगा को देख कर ऐसा लगता था, जैसे खेतों की हरियाली उसी पर छाई हुई है...

अल्हड़, मस्त गंगा पूरे गांव में घूमतीफिरती... कभी गन्ना चूसते हुए, तो कभी बकरी के बच्चे को पकड़ने के लिए... गांवभर के मुस्टंडे आंखें भरभर कर उसे देखा करते और ठंडी आहें भरते थे, पर गंगा किसी को घास नहीं डालती थी.

गांव के सरपंच के बेटे की शादी का मौका था... सरपंच के घर खूब रौनक थी... दूरदराज के गांवों से भी ढेरों मेहमान आए थे.

गंगा के पिता लक्ष्मण सिंह और सरपंच में गहरी दोस्ती थी, सो गंगा का पूरा परिवार उस शादी में घराती के रोल में बिजी था. कई सारे इंतजाम लक्ष्मण सिंह के ही जिम्मे थे...

गंगा की मां पार्वती घर के कामों को निबटाने में सरपंच की पत्नी का हाथ बंटा रही थी. गंगा के लिए तो यह शादी जैसे कोई त्योहार, कोई उत्सव जैसी थी... नएनए कपड़े पहनना, सजनासंवरना और नाचगाने में बढ़चढ़ कर हिस्सा लेना...

"अरी ओ गंगा... कुछ काम भी कर लिया कर... सारा दिन यहां से वहां मटकती फिरती है..." पार्वती ने कहा.

"अरी अम्मां, काम करने के लिए तू तो है... अभी तो मेरी खेलनेकूदने की उम्र है," गंगा खिलखिलाते हुए बोली.

"देख तो... ताड़ जैसी हो गई है... कल हाथ पीले हो गए, तो अपनी ससुराल में खिलाएगी... पत्थर..." पार्वती गुस्सा दिखाते हुए बोली.

"अम्मां... तू फिक्र मत कर... मेरी ससुराल में नौकरचाकर होंगे... मैं नहीं करूंगी कोई कामधाम," गंगा ने तपाक से जवाब दिया.

"तेरे मुंह में गुड़ की डली मेरी लाडो... तेरी खातिर ऐसी ही ससुराल देखेंगे..." बीच में गंगा के पिता लक्ष्मण सिंह बोले.

"यह लो... सेर को सवा सेर. समझाने के बजाय उस की हां में हां मिला रहे हो... ओ गंगा के बापू... क्यों इतना सिर चढ़ा रहे हो... लड़की जात है... दोचार गुण सीख लेगी तो ससुराल में काम आएंगे..." गंगा की मां तुनक कर बोली.

"क्यों इस के पीछे पड़ी रहती हो... जब ब्याह होएगा... तो सब अपनेआप सीख जाएगी..." लक्ष्मण सिंह ने कहा.

"बापू... यह देखो... यह घाघरा और चोली सिलवाई है... अम्मां की बनारसी साड़ी से... कैसी है बापू?" गंगा ने पिता से पूछा.

"बहुत बढ़िया है... मेरी लाडो एकदम रानी लगती है रानी..." लक्ष्मण सिंह खुश होते हुए बोले.

गंगा लहंगाचोली को अपने तन से लगा कर हिलहिल कर खुद को निहार रही थी.

शाम को सरपंच के यहां से बरात निकलनी थी. गंगा के मांबापू पहले ही वहां पहुंच चुके थे. गंगा सजसंवर कर जब वहां पहुंची, तो सब के मुंह खुले के खुले रह गए...

हर कोई गंगा को ही देख रहा था... सब को अपनी तरफ देखते हुए देख कर गंगा शरमा गई. शर्म के मारे उस के गाल और गुलाबी हो गए...

दूसरे गांवों के सरपंच भी वहां आए हुए थे. सीमन गांव के सरपंच और उन का बेटा निहाल भी इस शादी में आए

थे... निहाल बांका जवान था. गठा हुआ शरीर और रोबदार चेहरामोहरा... झबरीली मूंछें और गुलाबी होंठ.

गंगा और निहाल ने एकसाथ एकदूजे को देखा. निहाल से नजरें मिलते ही गंगा का दिल जोरजोर से धड़कने लगा और निहाल तो बस एकटक गंगा को ही देखे जा रहा था... मानो उस की आंखें गंगा के सिवा कुछ देखना ही नहीं चाहती हों.

"चलो चलो... जल्दी करो... वर निकासी का समय हो गया," किसी ने कहा.

गंगा और निहाल की तंद्रा टूटी. बरात गई और बरात वापस भी आ गई... लेकिन गंगा और निहाल तो जैसे एकदूसरे में ठहर गए थे... प्यार का बीज फूट चुका था.

"गंगा..." किसी ने धीरे से गंगा को पुकारा.

गंगा ने देखा कि एक कोने में निहाल खड़ा था... उस ने गंगा को इशारा किया कि घर के पीछे आ जाओ.

गंगा का दिल जोर से धड़क रहा था, पर निहाल से मिलने की बेताबी भी थी... सब से नजरें बचा कर गंगा घर के पिछवाड़े में पहुंच गई, जहां निहाल बेसब्री से उस का इंतजार कर रहा था.

"गंगा..." निहाल ने गंगा के कान में कहा.

गंगा का पूरा शरीर सिहर गया... मानो निहाल की सांसें, खून के साथ उस की धमनियों में बहने लगी हों.

"हम आज अपने गांव वापस जा रहे हैं," निहाल ने गंगा से कहा.

यह सुन कर गंगा की आंखों में आंसू आ गए और उस ने पलकें उठा कर निहाल को देखा.

"अरी पगली, रोती क्यों हो... अब मैं तुम्हें ब्याह कर हमेशा के लिए साथ ले जाऊंगा," निहाल ने गंगा के आंसू पोंछते हुए कहा.

गंगा थरथर कांप रही थी. निहाल ने उस का माथा चूम लिया. गंगा को ऐसा एहसास पहले कभी नहीं हुआ था. वह लता की तरह निहाल से लिपट गई.

निहाल उसे उठा कर पिछवाड़े में मवेशियों के लिए बनी कोठरी में ले गया. गंगा सुधबुध खो बैठी थी और निहाल बेताब था. उस अंधेरी कोठरी में अचानक बिजलियां चमकीं... कई सारे जुगनू टिमटिमाने लगे... जज्बातों की बारिश जैसे थमने का नाम ही नहीं ले रही थी... बांध टूट गए...

कुछ ही पलों में सबकुछ शांत था, मानो एक भयंकर तूफान आया और फिर थम गया, जो छोड़ गया कुछ निशानियां... जिन्हें अब गंगा समेट रही थी.

"गंगा, मैं जल्दी ही आऊंगा और तुम्हें अपनी दुलहन बना कर ले जाऊंगा," निहाल बोला.

गंगा शांत थी. उसे कुछ कहनेसुनने का समय ही न मिला. निहाल फुरती से कोठरी से बाहर निकल गया.

गंगा पिघली जा रही थी. निहाल के प्यार और इस अनोखे एहसास से घिरी गंगा कोठरी से बाहर निकली. निहाल अपने पिता के साथ वापस गांव के लिए निकल चुका था.

गंगा नहीं जानती थी कि जिस पर उस ने अपना सबकुछ लुटा दिया है, वह कौन है, किस गांव का है और उसे लेने कब आएगा.

मदमस्त लहराती चंचल गंगा एकाएक शांत और गंभीर हो गई थी. रातदिन आहट रहती कि अब निहाल आए या उस की कोई खबर ही आ जाए... कई महीने बीत गए, पर निहाल नहीं आया.

पार्वती और लक्ष्मण सिंह समझ नहीं पा रहे थे कि खिलीखिली सी उन की बेटी क्यों पलपल मुरझा रही है.

नदी किनारे बैठ आंसू बहाती गंगा हताश हो गई... उस का धीरज अब जवाब दे चुका था. अम्मांबापू का ब्याह के लिए जोर देना... जैसे गंगा को भीतर ही भीतर मार रहा था.

एक दिन नदी की आतीजाती लहरों को देखतेदेखते जाने कौन सा तूफान गंगा के दिल में उठा कि उस ने नदी में छलांग लगा दी. गंगा डूबने लगी. उस का दम घुटने लगा. सांसें उखड़ने लगीं. एकाएक हाथपैर मारती गंगा के हाथ में लकड़ी का एक भारी लट्ठा आ गया. गंगा उस के सहारे तैर कर नदी के किनारे आ गई.

पानी में कूदने, डूबने और मौत का सामना कर लौटी गंगा के मन में एक ही विचार बारबार कौंध रहा था कि जानबूझ कर पानी में कूदने या अनजाने में पानी में गिरने पर इनसान कितना छटपटाता होगा... कितनी तकलीफदेह मौत होती होगी... उस समय उसे अगर एक लकड़ी मिल जाए... तो कितनों की जान बच सकती है... बस, उस ने कुछ सोच कर जंगल से लकड़ियां तोड़ीं और उन से एक नाव तैयार की और उतार दी नदी में.

अब गंगा ने तय किया कि उस की जिंदगी का एक यही मकसद होगा... वह इस नाव से सब को पार लगाएगी और डूबतों के प्राण बचाएगी...

गंगा अब 'नाव वाली गंगा' कहलाने लगी. गरीब जरूरतमंदों को नदी पार कराने वाली गंगा... डूबतों की जान बचाने वाली गंगा...

अम्मांबापू की उस के आगे एक न चली. गंगा ने शादी करने से साफ मना कर दिया. कह दिया कि ब्याह की बात की तो वह नदी में कूद कर अपनी जान दे देगी. अम्मांबापू ने हार मान ली.

महीने बीते... साल गुजरे.. नाव वाली गंगा नहीं बदली. वह डटी रही नदी किनारे... पार करवाती रही नदी... न जाने कितनी जानें बचाईं उस की नाव ने.

इस बार बारिश बहुत हुई. कई गांव के खेतखलिहान, घरजमीन सब बाढ़ की भेंट चढ़ गए, गंगा के गांव में भी बाढ़ ने तहलका मचाया, लेकिन गंगा औरों की तरह गांव छोड़ कर भागी नहीं, बल्कि बाढ़ में डूबे लोगों को बचा कर उन की देखरेख करती रही.

बाढ़ का पानी अब उतार पर था. गंगा अपनी नाव के साथ नदी किनारे बैठी थी कि तभी किसी ने नदी में छलांग लगा दी. गंगा ने लपक कर अपनी नाव उस तरफ चला दी. उस ने देखा कि एक नौजवान डूब रहा था, घबरा कर हाथपैर मार रहा था.

गंगा ने पास पहुंच कर उसे बड़ी मुश्किल से अपनी नाव पर चढ़ा लिया और उस की पीठ दबा कर पानी निकाला.

"क्यों कूदे... ?" गंगा ने औंधे पड़े उस नौजवान से पूछा.

"मेरा तो सबकुछ लूट गया है. खेतखलिहान, घरजायदाद सब बरबाद हो गया और परिवार भी... सब बह गए. अब मैं जी कर भी क्या करूंगा... क्यों बचाया तुम ने?" उस नौजवान ने उलटा लेटे हुए ही जवाब दिया.

"तूफान तो आते हैं और चले जाते हैं... पर इस का यह मतलब तो नहीं है कि जिंदगी खत्म हो गई. एक तूफान से क्या घबराना. हिम्मत करो और फिर जीना शुरू करो. हो सकता है कि कुछ बहुत अच्छा हो जाए..." गंगा ने कहा.

इतना सुन कर वह नौजवान पलटा. गंगा का मुंह खुला का खुला रह गया.

"निहाल..." गंगा बुदबुदाई.

"गंगा..." निहाल गंगा को देख कर हैरान रह गया.

"मैं ने तुम्हें धोखा दिया. उसी की सजा मुझे मिली है," निहाल रोते हुए बोला.

गंगा की आंखों से झरझर आंसू बह रहे थे.

"गंगा, क्या तुम मुझे एक मौका और नहीं दोगी?" निहाल ने गंगा की आंखों में आंखें डाल कर पूछा.

गंगा अवाक थी. उस ने निहाल पर एक तीक्ष्ण निगाह डाली और बोली, "तुम ने पश्चाताप कर लिया. इस से तुम्हारे तनमन का मैल धुल गया है, लेकिन तुम्हारा और मेरा मेल मुमकिन नहीं है. आओ, तुम्हें नदी किनारे लगा दूं, क्योंकि बीच मंझधार में छोड़ना मेरी फितरत नहीं है."

निहाल को नदी किनारे पर उतार कर गंगा की नाव चल पड़ी. निहाल देखता रहा दूर तक, उथली लहरों पर गंगा को चप्पू चलाते हुए.

नदी की कलकल से मानो यही आवाज सुनाई दे रही थी :

'सागर से मुझ को मिलना नहीं है,
सागर से मिल कर मैं खारी हो जाऊंगी.' ●

दिल्ली प्रैस

क्या कोरोना वायरस के प्राकृतिक प्रकोप ने भक्ति की पोलपट्टी खोल दी है. आखिर क्यों मंदिर-मसजिदों की जगह आज अस्पतालों, डाक्टरों, वैंटिलेटरों और औक्सीजन सिलैंडरों के पीछे भाग रहे हैं?

इस प्रकार के प्रश्नों का उत्तर आप के सुख व स्वास्थ्य के लिए आवश्यक है. आप इन्हें किसी और पर नहीं टाल सकते. इन स्थितियों से निबटने के लिए आप को तथ्यों को समझना होगा.

दिल्ली प्रैस की पत्रिकाएं आप को हर सामाजिक, राजनीतिक, व्यक्तिगत और पारिवारिक उलझन को सुलझाने में मदद करती हैं और वह भी मनोरंजक तरीके से तर्क, तथ्य और दिल को छूने वाले शब्दों में. आज ही से पढ़िए.

सरिता गृहशोभा मुक्ता सरस सलिल मनोहर सत्यकथा

[illegible] circulation@delhipress.in

डिजिटल एडिशन भी उपलब्ध

म से मछली म से मगरमच्छ

अशोक गौतम

होरी पंचम के खेत अब के फिर ज्यों बाढ़ की भेंट चढ़े, तो उस ने तनिक दिमाग लगा कर तय किया कि क्यों न इन तालाब बने खेतों में मछलीपालन कर इनकम बढ़ाई जाए, आपदा को अवसर में ही नहीं, सुनहरे अवसर में बदला जाए. इस का फायदा यह भी रहेगा कि वह सरकार के साथ भी चलेगा और इनकम भी हो जाएगी. मतलब, एक पंथ दो लाभ.

यह सोच कर होरी पंचम मछली बाबू के दफ्तर जा पहुंचा. उसे अपने औफिस में आया देख कर मछलीखालन विभाग माफ कीजिएगा मछलीपालन विभाग के हैड ने उस से पूछा, "कौन? मत्स्य कन्या?"

"नहीं साहब, होरी पंचम. गांव लमही, जिला कोई भी रख लो."

"तो मछली बाबू को क्यों डिस्टर्ब किया भरी दोपहर में? मछली बाबू से क्या चाहते हो?"

"साहब, गाय पाल कर गोबर तो बढ़ा, पर इनकम न बढ़ी. सो, अब मछली पाल कर इनकम बढ़ाना चाहता हूं."

"गुड... वैरी गुड. आदमी को समयसमय पर धंधा और सरकार बदलते रहना चाहिए. इस से धंधे और लीडरों में गतिशीलता बनी रहती है... तो क्या हुक्म है?"

"साहब, वैसे भी बाढ़ ने खेतों को तालाब बना दिया है, तो सोच रहा हूं कि जब तक खेतों का पानी उतरे, क्यों न तब तक खेतों में मछली की खेती ही कर ली जाए. मछलियों से इनकम के लिए क्या करना होगा साहब?"

"करना क्या है... हम से मछलियों का बीज ले जाओ और जब तक बाढ़ जाए उस से पहले ही जन से जनप्रतिनिधि हुओं की तरह हाथ पर हाथ धरे सौ गुना कमाओ, वह भी लेटेबैठे."

"पर, मछली का बीज तो असली ही होगा न मछली साहब?" होरी पंचम ने मछली बाबू के आगे सवाल खड़ा किया, तो मछली बाबू यों उछलते हुए बोले, "ज्यों पानी से बाहर मछली निकाले जाने पर उछलती है."

"क्या मतलब है तुम्हारा...? सरकार पर तो आएदिन सवाल खड़े करते ही रहते हो, अब सरकारी बीज पर भी सवाल खड़ा करते हो?"

"नहीं साहब... माफ करना... मेरा मतलब वह नहीं था, जो आप सोच रहे हो, पर पिछली दफा भी मैं आम के पौधे ले गया था सरकार की नर्सरी से, बड़े हुए तो बबूल निकले.

"लोन पर गाय ले गया था सरकार के फार्म से. सोचा था कि देश में दूध की नदियां बहा दूंगा. पर, घर जाते ही वह गाय सांड़ निकली. बस, इसीलिए जरा तसदीक करना चाहता था कि..." होरी पंचम ने मछली साहब के आगे हाथ जोड़ते हुए सच कहा, तो मछली साहब बोले, "देखो, ये ऐसीवैसी मछलियां नहीं हैं, बल्कि हजार सरकारी टैस्टों से गुजरी हैं. ये साधारण किस्म की नहीं, असाधारण ब्रीड की मछलियां हैं होरी पंचम. जो बाढ़ का पानी उतरने से पहले ही मछली का हर बच्चा 30-30 किलो का न हो जाए तो कहना..."

होरी पंचम ने मछली बाबू से 10 किलो मछली का बीज उधार के पैसों से लिया और घर जा कर खेत बने तालाबों में डाल दिया. मछलियों के बच्चे बढ़ने लगे. होरी पंचम उन के चारे के लिए साहूकार से उधार पर उधार लेने लगा कि ज्यों ही मछलियों की फसल तैयार होगी, वह साहूकार की पाईपाई चुका देगा.

पर हफ्तेभर बाद ही होरी पंचम ने देखा कि मछलियों के बच्चों की शक्ल मगरमच्छ के बच्चों में बदलने लगी है, तो उसे अपनी आंखों पर यकीन ही नहीं हुआ.

पर फिर उस ने सोचा, 'हो सकता है कि खास किस्म की मछलियां हों...' पर फिर उस ने नोट किया कि जब वह उन्हें चारा देने जाता है, तो वे उसे खाने को दौड़ पड़ती हैं सरकारी मच्छों की तरह.

आखिरकार होरी पंचम ने जब धनिया पंचम को यह बात बताई तो वह अपना सिर पीटतीपीटती खेत बने तालाब के पास आई. उस ने देखा तो उस के भी होश उड़ गए. मछलियों के बच्चे वाकई मगरमच्छ के बच्चों की शक्ल ले रहे थे.

यह देख कर होरी पंचम जल्दीजल्दी में धनिया के जूते पहने दौड़ादौड़ा फिर मछली बाबू के औफिस गया और जाते ही मछली बाबू के पैर पड़ फरियाद की. मछली बाबू उस समय कुरसी पर मच्छ की तरह पसरे थे.

होरी पंचम बोला, "मछली बाबू... मछली बाबू..."

"अब क्या हो गया? फसल तैयार हो गई क्या? मछली बाबू को नई फसल का पहला कटान चढ़ाने आए हो? और इनकम बढ़ाने का बीज चाहिए क्या?"

"नहीं मछली बाबू साहब, जो ले गया था अभी तो वही नहीं संभाला जा रहा," कहतेकहते होरी पंचम रोने सा लगा.

"क्या मतलब है तुम्हारा?" मछली महकमे की कुरसी पर पसरे मछली बाबू मगरमच्छ से मगरमच्छियाए.

"मछली बाबू, जो असली मछलियों का बीज आप से इनकम बढ़ाने के चक्कर में ले गया था, वह बीज तो मछलियों से मगरमच्छ हुआ जा रहा है."

"तो क्या हो गया... म से मछली तो म से मगरमच्छ. हैं तो दोनों की सिंह राशि वाली ही न. शुक्र करो, जो दोनों की अलगअलग राशि न निकली. ऊपर से दोनों जल में रहने वाले. जो बीज आकाश में रहने वाले का और देह जमीन पर चलने वाले की निकलती तो बता क्या होता?

"बड़े लकी हो यार होरी पंचम, वरना यहां तो कई बार मछली बाबू से किसान मछलियों का बीज ले जाता है और बाद में वह बीज निकलता दरियाई घोड़ों का है."

"तो साहब अब..." होरी पंचम ने धीरे से पूछा.

पर मछली बाबू चुप रहा, कुरसी पर मगरमच्छ सा पसरा हुआ. ●

दिल्ली प्रेस

गृहशोभा

सचेत, सक्षम, सफल, स्मार्ट

स्वतंत्र चट्टान से
विश्वास का आईना बनाए,
तैयार करे हर कल के लिए.

पाक्षिक पत्रिका

संपर्क करें या http:www.delhipress.in/subscribe देखें.

रेव पार्टी :

'किंग खान' का बेटा फंसा कानूनी दांवपेंच में

सोमा घोष

2 अक्तूबर, 2021 को फिल्म कलाकार शाहरुख खान के बेटे आर्यन खान को मुंबई से गोवा जा रहे एक शाही क्रूज पर चल रही रेव पार्टी में ड्रग्स लेने के जुर्म में एनसीबी यानी नारकोटिक्स कंट्रोल ब्यूरो ने गिरफ्तार किया था.

इस धरपकड़ में आर्यन खान के अलावा गिरफ्तार किए गए 2 और लोग अरबाज मर्चेंट और मुनमुन धमेचा को भी मुंबई के किला कोर्ट में पेश किया गया, जहां से तीनों को 7 अक्तूबर, 2021 तक कस्टडी में रखने का फैसला सुनाया गया.

पता चला है कि आर्यन खान के पास भी ड्रग्स मिली है. इस मामले में इन तीनों के अलावा 5 और लोग भी गिरफ्तार किए गए, जिन से पूछताछ जारी रही.

इस मामले के चर्चा में आने के बाद देशभर में रेव पार्टी की जम कर बुराई हो रही है. लोग जानना चाहते हैं कि आखिर रेव पार्टी में कई बार मौडल और सैलेब्रिटी किड्स यानी नामचीन लोगों के बच्चे ही क्यों पकड़े जाते हैं और इन पार्टियों में होता क्या है?

कब हुई शुरुआत

रेव पार्टी की शुरुआत यूरोप के देशों में हुई थी. 60 के दशक में होने वाली ऐसी पार्टियां शराब और शबाब तक सीमित थीं, लेकिन 80 के दशक में इन का स्वरूप बदलने लगा और इन्होंने रेव पार्टी का रूप ले लिया. 90 के दशक की शुरुआत में कई देशों में रेव पार्टियां होने लगी थीं.

'रेव' शब्द का मतलब एक ऐसी डांस पार्टी से है, जो रातभर चलती रहती है. इस में एक डीजे पर गाना बजता है और लोग संगीत की धुन पर थिरकने के साथसाथ खूब मौजमस्ती करते हैं.

ये पार्टियां ज्यादातर बंद कमरे में और कम रोशनी में चलती हैं. इस की जानकारी केवल इन पार्टियों में आने वाले चंद लोगों को ही होती है.

भारत में इस की शुरुआत गोवा से हुई, जहां हिप्पी इसे ले कर आए थे, लेकिन अब ये पार्टियां हिमाचल प्रदेश की कुल्लू घाटी के अलावा बैंगलुरु, पुणे, मुंबई, हैदराबाद, कोलकाता, चेन्नई जैसे कई शहरों में होती हैं. ऐसे शहर रेव पार्टियों के हौटस्पौट बन कर उभरे हैं.

रेव पार्टी में होता क्या है

रेव पार्टियों में डांस, मस्ती, धमाल, शराब, ड्रग्स लेने की पूरी छूट होती है. ये पार्टियां रातभर चलती हैं. इन पार्टियों में जाने वाले लोगों को फीस के तौर पर मोटा पैसा देना पड़ता है.

इन पार्टियों में तेज संगीत बजता है और नौजवान मस्ती और नशे में चूर होते हैं. खानापीना, सिगरेटशराब के अलावा कोकीन, हशीश, चरस, एलएसडी जैसी जानलेवा ड्रग्स का भी इंतजाम रहता है. कुछ रेव पार्टियों में सैक्स के लिए 'चिल रूम्स' भी होते हैं.

एनसीबी के अफसरों की मानें, तो रेव पार्टियां केवल पार्टी सर्किट से जुड़े हुए कुछ चुनिंदा लोगों के लिए कराई जाती हैं. नए लोगों को इन पार्टियों में आने की इजाजत नहीं होती. सीक्रेसी का पूरा ध्यान रखा जाता है. ड्रग्स लेने और बेचने वालों के लिए यह एक सुरक्षित जगह होती है.

हालिया रेव पार्टी में पकड़े गए आर्यन खान के साथ जिन 2 लोगों मुनमुन धमेचा और अरबाज मर्चेंट के नाम जुड़े हैं, उन का आर्यन खान के साथ रिश्ता क्या है?

39 साल की मुनमुन धमेचा फैशन जगत की एक नामचीन मौडल हैं, जो मध्य प्रदेश के सागर जिले की रहने वाली हैं, लेकिन सागर में उन के परिवार का अब कोई भी सदस्य नहीं रहता है.

कारोबारी परिवार की मुनमुन धमेचा पिछले साल अपनी मां और उस से पहले अपने पिता को खो चुकी हैं. उन का एक भाई प्रिंस धमेचा है, जो नौकरी की वजह से दिल्ली में रहता है. इस मौडल के इंस्टाग्राम पर 70,000 से ज्यादा फैन हैं.

अरबाज मर्चेंट फिल्मों में काम के लिए जद्दोजेहद कर रहा है. उस की जानपहचान आर्यन खान और सुहाना खान दोनों के अलावा कई और स्टार किड्स के साथ है. इंस्टाग्राम पर अरबाज मर्चेंट की तसवीरें कई बार फिल्म हीरोइन रह चुकी पूजा बेदी की बेटी अलाया फर्नीचरवाला के साथ देखी गई हैं, जिन्हें वह डेटिंग कर रहा था.

मुनमुन धमेचा

अरबाज मर्चेंट के पिता असलम मर्चेंट मुंबई में एक वकील हैं और लकड़ी का कारोबार भी संभालते हैं, जबकि नाना मुंबई हाईकोर्ट के रिटायर्ड जज हैं, जो बांद्रा में रहते हैं. आर्यन खान और अरबाज मर्चेंट दोनों स्कूल फ्रैंड्स भी हैं.

यह बात सही है कि रेव पार्टियां काफी महंगी होती हैं, इसलिए इन में आने वाले सभी पैसे वाले घरों से होते हैं. हालांकि शाहरुख खान ने अपने बेटे आर्यन खान को अच्छी परवरिश देने के लिए फिल्म इंडस्ट्री से दूर विदेश में भेजा था, लेकिन गलत संगत और नशे का आदी होने की वजह से उसे जेल की हवा खानी पड़ रही है.

बौलीवुड सितारे या उन के बच्चे कानून और पुलिस के लिए सौफ्ट टारगेट होते हैं, इसलिए उन्हें पकड़ने पर लोगों में चर्चा ज्यादा होती है और इस बात का पीड़ित को हर्जाना भी भुगतना पड़ता है. इस बात के कई सुबूत हैं, जिन की वजह से बौलीवुड के कई सितारे पहले बदनाम हुए और बाद में उन का कैरियर बरबाद हो गया.

आर्यन खान अब फिल्मों में आने के लिए तैयार हो रहे हैं, ऐसे में इस तरह की बदनामी उन के फिल्म कैरियर पर असर जरूर डालेगी.

कितनी घातक हैं ये पार्टियां

ड्रग्स का धंधा दुनियाभर में फैला है और इस में फंसने वाले ज्यादातर नौजवान ही होते हैं. बौलीवुड ही नहीं, बल्कि देश के ज्यादातर मैडिकल और इंजीनियरिंग कालेजों में खासकर होस्टल में रहने वाले नौजवान ड्रग्स की चपेट में आते हैं, जिन्हें उन के मांबाप काफी पैसे खर्च कर के वहां भेजते हैं.

इस धंधे का फायदा ड्रग्स माफिया को होता है और नशे के आदी नौजवान खुद इस दलदल में फंसते चले जाते हैं. इस से उन की पढ़ाईलिखाई, भविष्य सब बेकार हो जाता है.

ड्रग्स के खिलाफ हर देश में सख्त कानून बना हुआ है, लेकिन इन ड्रग्स सप्लायरों का काम चलता रहता है, जो बहुत ज्यादा चिंता की बात है. कुछ भी हो, इस बुराई की जद में आने वाले नौजवानों का भविष्य यकीनन बरबाद हो जाता है. ●

विक्रम भट्ट ने रचाई दूसरी शादी

'कुसूर' और 'राज' जैसी हिट फिल्में बनाने वाले डायरैक्टर विक्रम भट्ट के हीरोइन सुष्मिता सेन और अमीषा पटेल के साथ इश्क के चर्चे भी आम हुए थे. अब खबर आई है कि हाल ही में 52 साल के हुए विक्रम भट्ट ने दूसरी शादी कर ली है और उन की पत्नी का नाम श्वेतांबरी सोनी है.

ऐसा कहा जा रहा है कि विक्रम भट्ट और श्वेतांबरी सोनी ने पिछले साल लौकडाउन में गुपचुप तरीके से शादी रचाई थी, जिस की जानकारी उन्होंने अब श्वेतांबरी सोनी के जन्मदिन पर एक तसवीर सोशल मीडिया पर शेयर कर के दी है.

याद रहे कि श्वेतांबरी सोनी विक्रम भट्ट से तकरीबन 17 साल छोटी हैं और विक्रम भट्ट ने इस से पहले अदिति भट्ट से शादी की थी. दोनों की एक बेटी कृष्णा भट्ट है. साल 1998 में अदिति और विक्रम का तलाक हो गया था.

मृणाल ठाकुर बनेंगी ईशान खट्टर की बहन

शाहिद कपूर के सौतेले छोटे भाई ईशान खट्टर धीरेधीरे हिंदी फिल्मों में अपनी जड़ें जमा रहे हैं. वे राजा कृष्ण मेनन की फिल्म 'पिप्पा' में दिखाई देंगे जो ब्रिगेडियर बलराम सिंह मेहता की किताब 'द बर्निंग चाफीस' पर आधारित है. इस फिल्म में ईशान खट्टर ब्रिगेडियर मेहता के किरदार में नजर आएंगे.

इस फिल्म में ईशान खट्टर की बहन का किरदार मृणाल ठाकुर ने निभाया है, जो इस से पहले 'सुपर 30' और 'तूफान' जैसी फिल्मों में अपनी अदाकारी दिखा चुकी हैं. फिल्म 'पिप्पा' की शूटिंग के अनुभवों के बारे में मृणाल ठाकुर कहती हैं, "फिल्म 'पिप्पा' की शूटिंग के दौरान मैं ने बहुत अच्छा समय बिताया और बतौर हीरोइन बहुतकुछ सीखा. अपने किरदार की तैयारी के दौरान उस दौर की जानकारी हासिल करते हुए मुझे बहुत मजा आया."

यह क्या बोल गए इमरान खान

आमिर खान के भांजे और फिल्म 'डेली बेली' से चर्चा में रहे फिल्म कलाकार इमरान खान ने अपने एक अजीबोगरीब सच के बारे में बताया कि एक बार एक शख्स, जो किसी टौयलैट में उन के बगल में खड़ा था, ने उन से हाथ मिलाने की कोशिश की थी.

इतना ही नहीं, कुछ साल पहले इमरान खान ने बौलीवुड की बड़ी पार्टियों को ले कर चौंकाने वाले खुलासे किए थे. तब उन्होंने कहा था कि ऐसी पार्टियों में लोग ड्रिंक करते हैं, नाचते हैं, कौर्नर में खड़े हो कर उन लोगों की बुराई करते हैं, जिन्हें वे पसंद नहीं करते हैं. नशे में रिश्ते बनते हैं और झगड़े होते हैं. लोग बाथरूम में जाते हैं, भले ही उन्हें टौयलैट न करनी हो.

फिलहाल इमरान खान की अपनी पत्नी अवंतिका मलिक के साथ रिलेशनशिप सुर्खियों में है. खबरों के मुताबिक, उन दोनों के रिश्ते में लंबे समय से दिक्कतें चल रही हैं. ऐसा भी कहा जाता है कि वे दोनों एकदूसरे से अलग हो गए हैं.

इमरान और अवंतिका ने साल 2011 में शादी की थी और उन की एक बेटी इमारा है. ●

सच्ची सलाह

मैं 35 साल का एक शादीशुदा मर्द हूं. मेरे बच्चे नहीं हैं. इस बात से मेरी पत्नी बहुत ज्यादा परेशान रहती है और बच्चा न हो सकने की वजह मुझे समझती है.

पिछले कुछ समय से वह मुझ पर ध्यान न दे कर पराए मर्दों पर डोरे डालने लगी है. अब तो वह इतनी ज्यादा उतावली लगती है कि किसी राह चलते से भी जिस्मानी रिश्ता बना ले. क्या यह कोई दिमागी बीमारी तो नहीं या फिर वह सच में मां बनने के लिए किसी भी हद तक जा सकती है? मैं क्या करूं?

आप यह किस बिना पर मान रहे हैं कि बच्चा न होने की वजह आप हैं? हालांकि मुमकिन यह भी है कि कोई कमी आप की पत्नी में ही हो. औरतों में बच्चे की चाहत होना बेहद कुदरती बात है, क्योंकि बच्चा न होने पर उन्हें 'बांझ' और 'निपूती' होने जैसे ताने सुनने पड़ते हैं.

आप के लिए बेहतर यही होगा कि दोनों डाक्टरी जांच कराएं और किसी में कोई कमी हो तो इलाज कराएं. इस पर भी बात न बने तो टैस्ट ट्यूब बेबी की कोशिश करें या बच्चा गोद ले लें.

यह सही है कि पत्नी का राह चलते लोगों से संबंध बना लेने की बात भी आप को चुभती होगी. इस के लिए उसे प्यार से समझाएं.

●

मैं 21 साल का एक कुंआरा नौजवान हूं. मुझे अपना कैरियर बनाना है और मेरे घर वाले हैं कि जल्दी से जल्दी मेरी शादी कर के अपनी जिम्मेदारी से छुटकारा पा लेना चाहते हैं.

इतना ही नहीं, वे 'लड़की कौन ढूंढ़े' की तर्ज पर मेरी शादी मेरी भाभी की छोटी बहन से करा देना चाहते हैं. इस बात से मैं अपनी पढ़ाई और आगे नौकरी पर ध्यान नहीं दे पा रहा हूं. मैं क्या करूं?

पहले आप कैरियर पर ध्यान दें, लेकिन यह भी खयाल रखें कि पत्नी अच्छी मिले तो वह कैरियर में अड़ंगा नहीं बनती. भाभी की बहन से शादी करना हर्ज की बात नहीं, बशर्ते वह आप को पसंद हो. आज नहीं तो कल शादी तो करनी ही है, पर इस के लिए अपने कैरियर की बलि न चढ़ाएं. अच्छा होगा कि यह बात घर वालों को समझाएं और उन से कुछ दिनों की मोहलत ले लें. ●

रोग प्रतिरोधक क्षमता बढ़ाए

MultipreX™

Advanced Formula For Strong Immunity

कैप्सूल, सिरप, ओरल ड्राप्स एवं पाउडर

200 ml
Multivitamin, Multimineral & Antioxidant Syrup
MULTIPREX Syrup
Delicious Mix Fruit Flavour
ZEE DRUGS
MULTIPREX Syrup
MultipreX
Multivitamin, Multiminerals & Antioxidant Soft Gelatin Capsules
MultipreX
Advanced Formula for Strong Immunity
ZEE
ZEE DRUGS

प्रतिरक्षा में सुधार, विटामिन और मिनरल की कमी को पूरा कर रोगो से बचाए

ZEE LABORATORIES LTD.

रोजाना सेवन करे
9896134500
हर प्रमुख दवा विक्रेता के यहां उपलब्ध

Licenced to Post Without Pre Payment (REGISTERED) RNI 55680/93/DL/(C)-14/1079/2021-23/U(C) 163/2021-23 Saras Salil (Hindi) October-II
J.P.O. SRT Nagar, ND-55 Posting Dt. 14 to 20, Published on 1/10/2021 Pgs.32

REVITAL H™

SUN PHARMA

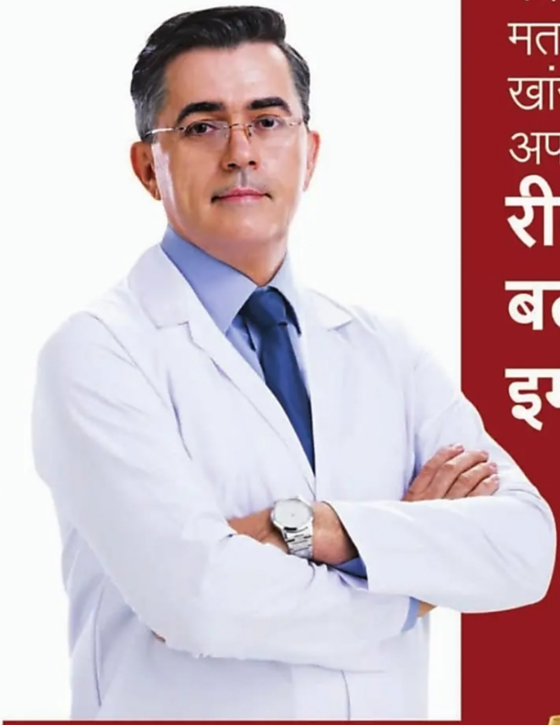

बदलता मौसम
मतलब सर्दी,
खांसी, ज़ुकाम.
अपनाएं
रीवाइटल एच,
बढ़ाएं
इम्युनिटी.

3X* तक ज़्यादा ज़िंक

*ज़िंक आधारित अन्य सप्लीमेंट्स की तुलना में.

ज़ुकाम

सर्दी और खांसी

थकान

✓ ज़िंक और विटामिन C इम्युनिटी बढ़ाए
✓ नैचुरल जिनसेंग एनर्जी बढ़ाए

REVITAL H™
For Daily Health
30 Capsules
Ginseng
Minerals
Vitamins
REVITAL H™
WOMAN
For Daily Health
30 Tablets
Calcium
Iron
Vitamins
Minerals
Ginseng

रहो चार्ज्ड

रिवाइटल एच एक न्यूट्रास्यूटिकल है. सेहत संबंधी फ़ायदे इंग्रीडियंट आधारित हैं. प्रॉडक्ट का उद्देश्य किसी बीमारी का निदान, इलाज, बचाव या उपचार करना नहीं है.